मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

फाल्गुन-चैत्र संवत् नानकशाही ५५६-५७ मार्च 2025 वर्ष १८ अंक ७

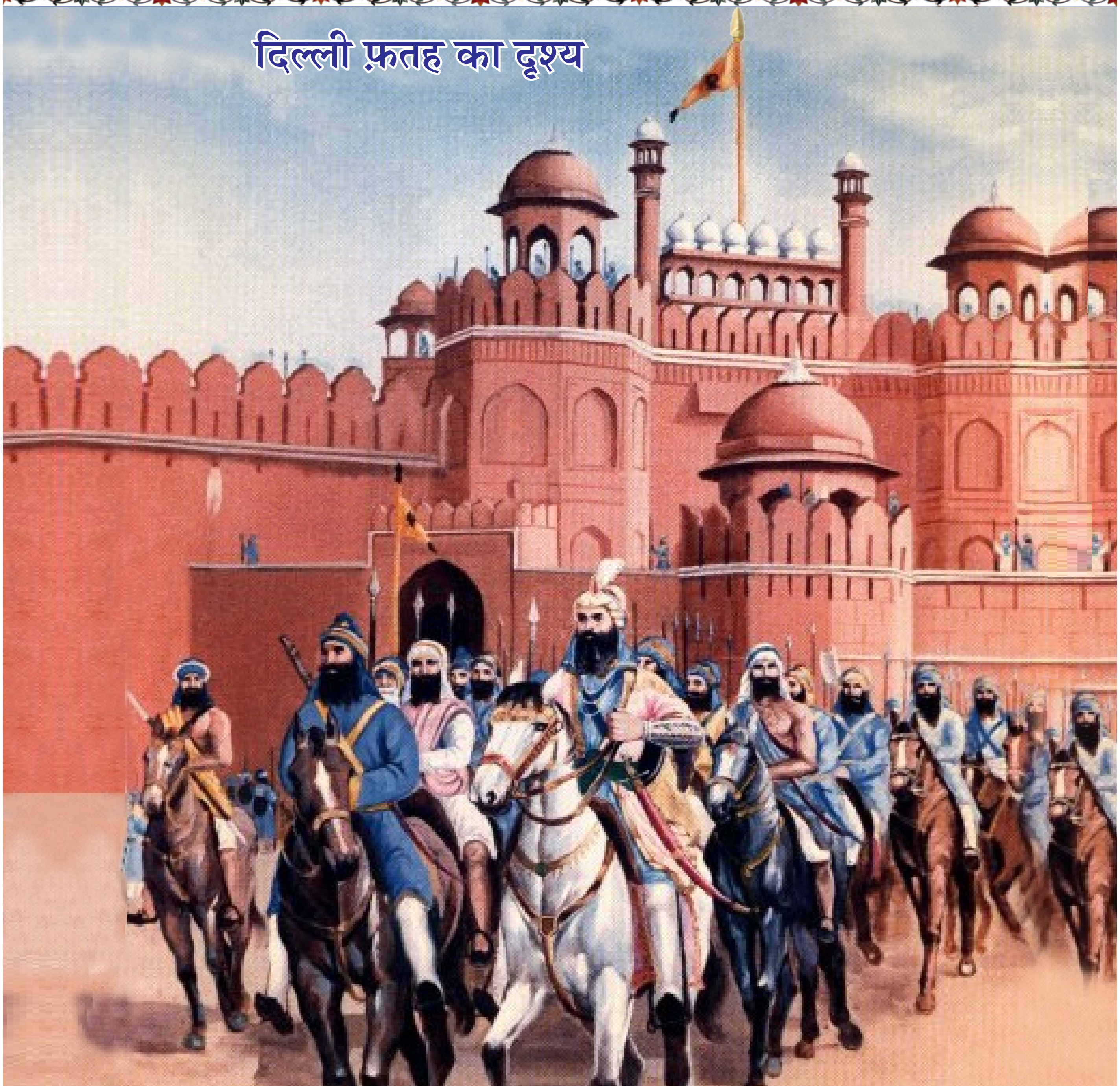

दिल्ली फ़तह का दृश्य

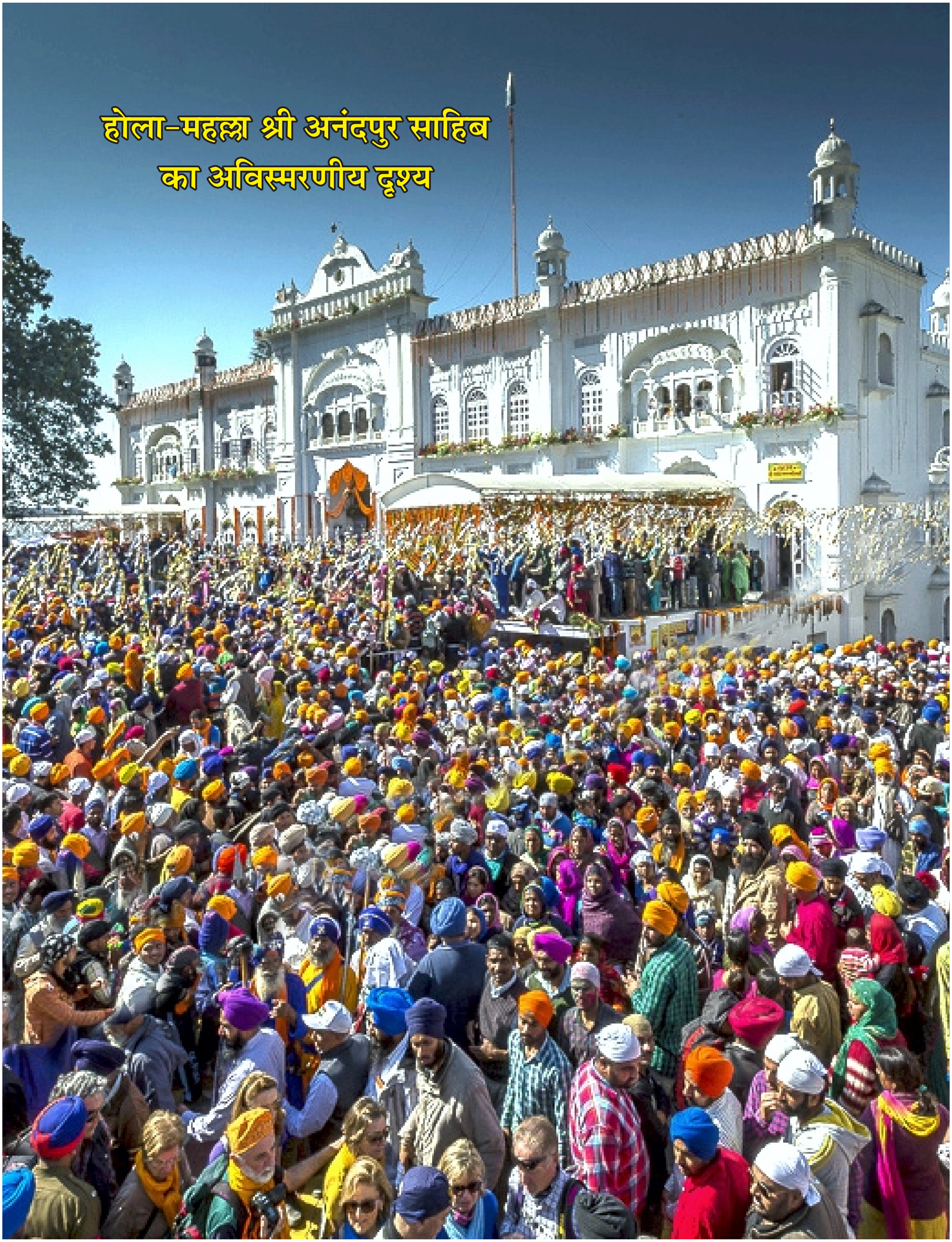

होला-महल्ला श्री अनंदपुर साहिब
का अविस्मरणीय दृश्य

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

फाल्गुन–चैत्र संवत् नानकशाही 556-57

वर्ष 18 अंक 7 मार्च 2025

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब -143006

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 6

... भाई मरदाना जी 8
–डॉ. मनजीत कौर

भक्त पीपा जी की सामाजिक चेतना 12
–श्री ललित शर्मा

महान् सिक्ख जरनैल सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिआ 17
–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'

.... अकाली फूला सिंघ 22
–डॉ. कशमीर सिंघ नूर

होली कीनी संत सेव।। 26
–डॉ. जगजीत सिंघ

ऐसे मनाएं होला-महल्ला ! 29
–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन

माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे॥ 33
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

सिक्ख रहितनामों में महिला-सम्मान 41
–डॉ. गुरतेज सिंघ ठीकरीवाला

कैसा हो सलीका-ए-गुफ़्तगू? 47
–प्रिं. जोगिंदर सिंघ

क्या आरएसएस ने मुसलिम लीग के दंगाकारियों से ... 50
–स. जसकरन सिंघ

ख़बरनामा 56

गुरबाणी विचार

तुखारी छंत महला १ बारह माहा ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ।।
तू सुणि किरत करंमा पुरबि कमाइआ ।।
सिरि सिरि सुख सहंमा देहि सु तू भला ।। . . .
उनवि घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि प्रेमु सुखावै ।।
नानक वरसै अंम्रित बाणी करि किरपा घरि आवै ।।४।। *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०७)*

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक साहिब जी ने तुखारी राग में उच्चारण की गई 'बारह माहा' बाणी के प्रारंभ में जिन चार पउड़ियों का उच्चारण किया है, उनमें गुरु साहिब परमात्मा को संबोधित करते हुए प्रवचन करते हैं कि हे मालिक! जो भी सुख या दुख तू जीव को देता है वो यथान्याय है। कहने से तात्पर्य, मनुष्य मात्र सुख ही की इच्छा न करता रहे, वह दुख को भी अपने जीवन का भाग समझे। हे परमात्मा! सारी रचना जो दिखाई देती है सब तेरी ही तो है। तेरी निर्मल स्मृति के बिना मुझ असहाय जीव का क्या जीवन है? परमात्मा के बिना अति मुश्किल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। संसार में जीव का कोई अन्य मित्र, सखा, सहायक नहीं है। जीव माया-जाल में उलझे हुए हैं। प्रभु को हृदय में बसा हुआ अनुभव करना ही सर्वश्रेष्ठ कर्म है। जीव-स्त्री परमात्मा-पति की राह निहार रही है, परमात्मा के दर्शनार्थ लालायित है।

पपीहा 'प्रिउ-प्रिउ' बोलता है और कोयल 'कू-कू' की मीठी वाणी बोलती है। जो जीव-स्त्री प्रभु के अंग-संग रहती हुई उसके नाम में रत हो जाती है, प्रभु-स्वामी को वही अच्छी लगती है, वही सुहागिन है। वह अपनी शारीरिक इंद्रियों को प्रभु-नाम में टिकाकर उच्चावस्था प्राप्त कर लेती है। उसके हृदय रूपी घर में प्रभु-प्रियतम का निवास हो जाता है। वह इस मनोस्थिति में स्वयं को 'मैं तेरी हूं . . . मैं तेरी हूं' कहती हुई दिन-रात उसके रंग में रंगी रहती है।

श्री गुरु नानक देव जी महाराज कथन करते हैं कि मेरा पपीहा रूपी मन प्रियतम- प्रियतम ही पुकारता है। हे मेरे प्रियतम! मेरी विनती सुनो! मैं आप जी को एक पल भी भुला नहीं सकता। भुलाना भी क्यों है ? मैं तो जिंदा ही आपके गुण-गायन करने के कारण हूं। जब से मैंने आप जी का सहारा चाहा है, जब से आप जी के पावन चरणों का मेरे हृदय में निवास हुआ है, मेरा यह नश्वर शरीर पवित्र हो गया है। गुरु जी कथन करते हैं कि ऐसी व्यापक दृष्टि मिल जाने से मनुष्य आत्मिक आनंद को पा लेता है। गुरु के शब्द में चित्त जुड़ने के कारण मानवीय मन को संतुष्टि मिल जाती है।

जिस जीव-स्त्री के हृदय में प्रभु के नाम-अमृत की सुहावनी धारा बहती है उसे सदीवी मित्र परमात्मा सहज भाव से मिल जाता है। उसे स्थिर अवस्था प्राप्त हो जाती है। उस जीव-स्त्री का हृदय प्रभु-पति का निवास-स्थान बन जाता है। वो जीव-स्त्री प्रभु-गुण-गायन करती रहती है। ऐसी मनोस्थिति में जीव-स्त्री घिरकर आये बादलों से विनती करती है कि हे बादल! तू ऐसे बरस कि मेरे तन-मन में प्रभु प्यारे का प्रेम उमड़ आए। श्री गुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि जिस हृदय-घर में प्रभु-नाम की स्तुति की वर्षा होती है, प्रभु वहां स्वयं निवास करता है।

चेतु बसंतु भला भवर सुहावड़े ॥
बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़ै ॥
पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥
कोकिल अंबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥
भवरु भवंता फूली डाली किउ जीवा मरु माए॥
नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाए।।५।। *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०७)*

गुरु जी फरमान करते हैं कि यह जो चैत्र का मास है यह बसंत ऋतु होने के कारण अच्छा लगता है। इस मास में वनस्पति फलती-फूलती है तथा इसके ऊपर भंवरे मंडराते हुए सुंदर दिखाई देते हैं। खुली जूह में वनस्पति का फलना-फूलना तभी अर्थपूर्ण होगा यदि मेरा प्रभु-पति भी मेरे हृदय-घर में आ बसे। जिस जीव-स्त्री का प्रभु-पति हृदय-घर में बसता नहीं, वह जीव-स्त्री कैसे सुखी होगी? अर्थात् कभी सुखी नहीं हो सकती। वह आत्मिक आनंद से रिक्त ही रहेगी। प्रभु-पति से बिछड़ना उसके लिए घोर दुखदायक सिद्ध होता है और बिछड़ने की स्थिति में उसका शरीर टूटता है। चैत्र के मास बाहरी वातावरण सुहावना लगता है। कोयल इस ऋतु में आम के पेड़ पर बैठकर मीठी वाणी बोलती है। फिर मेरा हृदय ऐसे सुहावने समय में प्रभु-पति की जुदाई का दुख क्यों सहन् करे ? अर्थात् यह जुदाई का दुख मेरे लिए असहनीय है। चैत्र के मास में फूलों की चाहत रखने वाला भंवरा फूलों से मालामाल हुई शाखा पर मंडरा रहा है। ऐसे सुहावने समय में मैं आत्मिक मृत्यु का दुख सहन् करती हुई क्यों जीऊं? अर्थात् ऐसी आत्मिक मृत्यु का दुख असहनीय है। मनुष्य-जन्म का लाभ ले रही जीव-स्त्री को सतिगुरु जी दिशा प्रदान करते हुए फरमान करते हैं कि चैत्र के महीने में जीव-स्त्री को प्रभु-पति के मिलाप का सुख सहज भाव में विचरण करते हुए प्राप्त हो सकता है, यदि वह जीव-स्त्री प्रभु-पति का अपने हृदय-घर में ही अनुभव प्राप्त कर ले। दूसरे शब्दों में, उसको कठोर शारीरिक तप-साधना और कर्मकांड आदि में उलझने की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

संपादकीय

माताएं धार्मिक आदर्शों की पथ-प्रदर्शक बनें !

वर्तमान समय में हम अगर अपने इर्द-गिर्द का अवलोकन करें, तो आज हमें गुरु साहिबान की आकांक्षाओं वाले आदर्श समाज की अनुपस्थिति ही नज़र आती है। इस सामाजिक अधोगति ने मानवता के नैतिक स्तर को बहुत ही निम्न कर दिया है। निदानस्वरूप, धर्मी समाज की सृजना ही सभी सामाजिक बुराइयों का सार्थक समाधान हो सकती है। धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जहां धार्मिक संस्थाएं, प्रचारक, कथावाचक आदि अपना-अपना योगदान दे रहे हैं, वहां हमारी माताएं इस कार्य में सबसे अहम भूमिका निभा सकती हैं। यदि हम गुरमति के अनुसार आदर्श धर्मी समाज की सृजना करना चाहते हैं तो सर्वप्रथम गुरमति की रौशनी में बच्चों के बचपन को संवारना होगा, जिस प्रकार फसल बोते समय पौध का विशेष रूप से पालन-पोषण किया जाता है, क्योंकि यदि पौध स्वस्थ होगी तभी बढ़िया फसल की आशा की जा सकती है। इसी प्रकार बच्चे समाज की पौध हैं और यदि गुरबाणी की खुराक व धार्मिक संस्कारों की बाड़ देकर बच्चों की परवरिश की जाए तो भविष्य में धर्मी समाज की संरचना संभव हो सकती है। यह कार्य माताएं ही कर सकती हैं। माँ को बच्चे का प्रथम अध्यापक माना जाता है। किसी इंसान का आचरण उसकी माँ द्वारा बचपन में दिए गए संस्कारों पर निर्भर करता है। मनोविज्ञानी भी यह बात मानते हैं कि बचपन में दिए गए संस्कारों का असर चिरकाल तक रहता है। हम जब पुरातन सिक्खों के विशुद्ध जीवन-आदर्श की भूमिका को देखते हैं तो तुलनात्मक स्तर पर आज हमारी में वर्तमान एवं पुरातन भूमिका में भारी अंतर नज़र आता है। अब यदि हम इस अंतर के कारणों को तलाशने का प्रयत्न करें तो इसके पीछे पुरातन माताओं की अपनी गुरसिक्खी जीवन वाली भूमिका तथा अपने बच्चों को दी जाती गुरमति की शिक्षा मुख्य कारण नज़र आएगी।

पुरातन माताएं अमृत बेला में उठकर, स्नान कर जब दूध बिलोने, आटा गूंथने लगती थीं तो साथ ही गुरबाणी का पाठ आरंभ कर देतीं तथा प्रशादा-पानी तैयार करते समय नित्तनेम सम्पूर्ण कर लेती थीं। इस तरह खाद्य पदार्थों में स्वत: 'बाणी का अमृत' घुल जाता था। पूरी रसोई अमृतमयी बन जाती थी। ऐसा अमृतमयी भोजन छककर पूरे परिवार की रगों में धर्म की लहर दौड़

पड़ती। ऐसे में गुरबाणी के रस से भरपूर परिवारों वाला समाज गुरु साहिबान के आशय वाला धर्मी समाज बन जाता है। ऐसे समाज में परिश्रम की किरत (श्रम) को सम्मान प्रदान किया जाता था। पाप की कमाई को गुरबाणी की पंक्ति "उसु सूअर उसु गाइ" के अनुसार हराम समझा जाता था। पुरातन माताएं जब अपने बच्चों को गोद में लेकर नाम-बाणी की शिक्षा देतीं तो ऐसी परवरिश पाकर बच्चे उच्च आचरण वाले बनकर समाज-उन्नति में सहभागी बनते थे। धर्मी माताओं की धर्मी परवरिश द्वारा तैयार धर्म हेतु शीश देने वाले, बंद-बंद कटवाने वाले, खोपड़ी उतरवाने वाले, चरखड़ियों पर चढ़ने वाले, आरे द्वारा चीरे जाने वाले, सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाने वाले धर्मी सिंघ ही नित्य की अरदास में याद किए जाते हैं।

आज यदि गुरु साहिबान के आदर्शों वाला समाज सृजित करना है तो आधुनिक माताओं को पूर्वकालीन सिक्ख इतिहास की माताओं की भाँति दक्ष बनकर गुरु साहिबान के वारिसों, अपने पुत्रों को ये आशीष देनी पड़ेगी कि "हे पुत्र! तुझे मां की यह आशीष है— तुझे परमात्मा न भूले! तू जगत के मालिक प्रभु का नाम स्मरण करता रहे! हे पुत्र ! गुरु तुझ पर दयावान रहे! गुरु के साथ तेरा प्यार बना रहे! हे पुत्र! आत्मिक जीवन देने वाला नाम-जल सदा पीते रहना! " अगर बचपन में ही बच्चों के गिर्द ऐसी आशीषों का चौगिर्दा सृजित कर दिया जाए तो यकीनन बच्चे बड़े होकर गुरमति आचार के धारक, गुरु-घर के प्रेमी तथा उच्च आदर्शों के मालिक बनेंगे।

आज ज़रूरत है कि सिक्ख माताएं सिक्खी के प्रचार तथा आदर्श समाज की संरचना के लिए एक लहर बनकर सामने आएं! बीबी भानी जी, माता गंगा जी आदि की वारिस बनकर अपने बच्चों को अपनी अमीर गुरमति विरासत के साथ जोड़ें! जिन बच्चों की माताएं उन्हें अपनी गोद में लेकर गुरबाणी पढ़ेंगी, उच्च आचरण की शिक्षा देंगी, साहिबज़ादों की शहादत की साखियां सुनाएंगी, भाई मनी सिंघ जी, भाई तारू सिंघ जी आदि की लासानी शहादत का इतिहास सुनाएंगी, तो बड़े होकर उन बच्चों के सिर पर 'कैंची' नहीं चल सकती। ऐसी परवरिश पाकर बच्चे कुरीतियों से अलहदा रहते हुए, सामाजिक बुराइयों से मुक्त होकर आदर्श समाज की सृजना करने के काबिल बन सकते हैं। आज समाज में प्रचलित अशिष्टता में से निकालकर बच्चों को साहिबज़ादों के वारिस बनाना विशेषकर माताओं के हाथ में है। माताएं ही अपने बच्चे को पूर्ण गुरसिक्खी जीवन वाला बनाने हेतु सबल कही जा सकती हैं।

महान संगीतज्ञ एवं गुरु-घर के प्रथम कीर्तनिये : भाई मरदाना जी

*–डॉ. मनजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सम्पूर्ण बाणी काव्यबद्ध है, जिसमें ३१ रागों की मधुर झंकार है, जिसे विशेष शैली एवं तरन्नुम में गायन किया जाता है, जिसका प्रत्येक स्वर और शब्द अनहद नाद है और यह महान देन है अकाल रूप गुरु-बाबा नानक जी की, जिन्होंने बाणी को गायन करने की रीति प्रारम्भ की और सभी गुरु साहिबान ने इसे जारी रखा। गुरबाणी का पावन संदेश है :

जिनी डिठा मेरा सतिगुरु भाउ
करि तिन के सभि पाप गवाई।।
हरि दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई।।
जनु नानकु मंगै धूड़ि तिन
जो गुर के सिख मेरे भाई।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३१०)

चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है कि जिसने मेरे सच्चे गुरु का प्रेमपूर्वक दर्शन किया, उसके समस्त पाप समूल नष्ट हो गए। ऐसे गुरु-प्यारों के मुख प्रभु-दरबार में उज्जवल होते हैं और उनकी महिमा का खूब गायन होता है। दास (नानक) उनके चरणों की धूल मांगता है, जो गुरु के सच्चे सिक्ख हैं और मेरे भाई हैं।

पंचम पातशाह का इस संदर्भ में बड़ा प्यारा फरमान है :

मै मूरख की केतक बात है
कोटि पराधी तरिआ रे।।
गुरु नानकु जिन सुणिआ
पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६१२)

श्री गुरु अरजन देव जी गुरु नानक पातशाह की महिमा को अभिव्यक्त करते हुए फरमान करते हैं कि मुझ मूर्ख की तो बात ही छोड़ो, करोड़ों अपराध करने वाले भी (भवसागर से) पार उतर गये हैं। जिन्होंने प्रत्यक्ष गुरु नानक पातशाह के दीदार किए हैं अथवा जिन्होंने अन्य लोगों से उनके बारे में सुना है, वे फिर कदाचित गर्भ-योनि में नहीं आते अर्थात् वे जन्म-मरण के चक्कर में नहीं पड़ते।

अगर उपरोक्त संदर्भ में विचार करें तो सिक्ख इतिहास में एक बहुत ही प्यारा नाम है— भाई मरदाना जी, जिन्हें गुरु नानक पातशाह के साथ

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

लम्बे समय तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वो भी उनका संगी बन कर, जिसकी बदौलत उन्हें अपना लोक-परलोक सफल बनाने का दुर्लभ एवं स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ।

गुरु नानक पातशाह की अपार रहमतों के पात्र भाई मरदाना जी का जन्म १४५९ ई. में राय भोय की तलवंडी (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ। आप जी के पिता का नाम भाई बदरा जी तथा माता का नाम माता लक्खो जी था। तथाकथित चौबड़ जाति के मुसलिम परिवार में जन्मे भाई मरदाना जी 'मीरासी डूम' कहलाते थे। इनका व्यवसाय सामाजिक परंपरा के अनुसार लोगों के मांगलिक अवसर पर गाना होता था। उन परिवारों द्वारा इन्हें उपहार प्रदान किए जाते थे। यही इनकी उपजीविका थी।

ऐसा उल्लेख मिलता है कि भाई मरदाना जी अपने माता-पिता की सातवीं संतान थे। भाई मरदाना जी से पूर्व जिन छ: बहन-भाइयों का जन्म हुआ वे अल्पायु में ही चल बसे। इतिहासकारों के विचारानुसार, इसी कारण से माता-पिता ने इनका नाम 'मरजाणा' रखा, जिसका अभिप्राय था कि "इसने भी मर जाना है।" लेकिन, गुरु नानक पातशाह ने इनका नाम रखा 'मरदाना', जिसका शाब्दिक अर्थ होता है— "मर-दा-ना अर्थात् न मरने वाला।" जिसे अकाल रूप गुरु नानक पातशाह ने 'मरदाना' नाम दे दिया हो वो भला कैसे मर सकता है! इस संदर्भ में सरदार करनैल सिंघ पंछी ने बड़ा खूब लिखा है— "जब तक मौसिकी है जिंदा, जिंदा मरदाना का नाम।" अर्थात् जब तक दुनिया में संगीत रहेगा, तब तक भाई मरदाना जी का नाम रहेगा।

भाई गुरदास जी ने बगदाद-गमन शीर्षक से लिखित अपनी वार की पउड़ी में लिखा है :

इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।
दिती बांगि निवाजि करि
सुंनि समानि होआ जहाना। (वार १:३५)

श्री गुरु नानक देव जी एवं भाई मरदाना जी की जन्म-स्थली एक ही है। भाई मरदाना जी गुरु जी से दस वर्ष बड़े थे। बहन बेबे नानकी जी अपने भाई श्री गुरु नानक पातशाह को अपने साथ अपनी ससुराल सुलतानपुर लोधी ले जाती हैं। बेबे नानकी जी के पति भाई जैराम जी, जो कि नवाब दौलत खान लोधी के राजस्व अधिकारी के रूप में तैनात थे, उन्होंने गुरु नानक पातशाह जी को नवाब दौलत खान लोधी के मोदीखाने में मोदी की नौकरी दिलवा दी। जब गुरु नानक पातशाह को वहाँ रहते काफी समय बीत गया तो गुरु नानक पातशाह की खबर लेने हेतु उनके पिता भाई कलिआण दास (महिता कालू) जी ने भाई बदरा जी से कहा। भाई बदरा जी ने अपने पुत्र भाई मरदाना जी को सुलतानपुर लोधी भेज

दिया।

अपने पिता की आज्ञा से गुरु नानक पातशाह की खबर लेने सुलतानपुर लोधी गए भाई मरदाना जी सदा के लिए श्रद्धा, प्रेम एवं निष्ठा से उनको समर्पित हो गए। गुरु नानक पातशाह भाई मरदाना जी की मधुर व सुरीली आवाज एवं समर्पण-भाव से अति प्रसन्न हुए और उन्हें अपना भाई, सखा, सब कुछ मान लिया। भाई मरदाना जी ने गुरु नानक पातशाह का ईश्वरीय रूप में साक्षात्कार किया।

अपनी धर्म-प्रचार-यात्राओं (उदासियों) के दौरान गुरु नानक पातशाह के साथ थे— भाई मरदाना जी। यह राह आसान न थी। घर से बेघर होकर अत्यंत कठिन मार्गों से गुजरना पड़ा था। खाने-पीने, विश्राम करने आदि की कोई सुलभ व्यवस्था नहीं थी। आवागमन के साधन नहीं थे। पीछे घर-परिवार के भरण-पोषण आदि की जिम्मेदारी थी। भाई मरदाना जी को श्री गुरु नानक पातशाह जी ने सभी चिंताओं से मुक्त कर दिया था। उनकी समस्त पारिवारिक जिम्मेदारियों को अपने पिता जी के माध्यम से अपने ऊपर ले लिया था। परिणामस्वरूप भाई मरदाना जी सहर्ष गुरु जी के संग चलने को तत्पर हुए।

वस्तुत: सूर्य रूपी गुरु बाबा नानक पातशाह के दर्शन एवं संगति के समक्ष समस्त सांसारिक धंधे तुच्छ प्रतीत होने लगे थे भाई मरदाना जी को। मोह-ममता के बंधन ढीले पड़ गए तथा सच्चे प्रेम की डोर बंध गई गुरु नानक पातशाह के साथ और चल पड़े लोक-कल्याण का बोझ उठाए दुर्गम मार्गों पर।

धर्म प्रचार-यात्राओं पर जाने से पूर्व गुरु नानक पातशाह ने भाई मरदाना जी को एक रबाब लेने हेतु भाई फरिंदा के पास भेजा। भाई फरिंदा ने वो रबाब अपने कर-कमलों द्वारा बड़ी निष्ठा, प्रेम एवं श्रद्धा-भावना से तैयार की थी। इस रबाब के लिए पैसे बेबे नानकी जी ने दिए थे। भाई फरिंदा द्वारा लगन से बनाई गई और भाई मरदाना जी के हाथों का स्पर्श पाकर वह रबाब धन्य हो गई और उसकी मधुर लहरियों से न जाने कितने जीव धन्य हुए।

गुरु नानक पातशाह की अमृतमयी बाणी और भाई मरदाना जी की रबाब के मधुर सुरों ने केवल लोगों को ही मंत्र-मुग्ध नहीं किया, अपितु पशु-पक्षियों को भी प्रभावित किया। जन्म-साखियों में भी भाई मरदाना जी महत्वपूर्ण पात्र हैं, जो पाठकों की रूह तक प्रभाव डालते हैं।

गुरु नानक पातशाह के संग भाई मरदाना जी को कई प्रकार के अनुभवों के दौर से गुजरना पड़ा। भाई मरदाना जी द्वारा जिज्ञासापूर्ण किए गए प्रश्नों का गुरु नानक पातशाह द्वारा उत्तर देना भाई मरदाना जी के ही नहीं, बल्कि समस्त मानव

जाति के मन के सवालों का जवाब बन गया।

ऐसा ही एक उदाहरण उस समय का दृष्टिगत होता है जब गुरु जी ने एक गांव के सज्जन लोगों, जिन्होंने गुरु जी एवं भाई मरदाना जी की खूब सेवा व आवभगत की, उनको गुरु जी 'उजड़ जाओ' का वचन करते हैं। इसके अन्यत्र बसे एक गाँव के लोगों द्वारा गुरु जी को अपशब्द बोले गए। गुरु जी को गाँव में ठहरने की आज्ञा न दी गई। उन्हें गुरु जी ने 'बसते रहो' का आशीर्वाद दिया। भाई मरदाना जी इस विचित्र घटनाक्रम से अत्यन्त विस्मय में थे। आखिर, उन्होंने गुरु नानक पातशाह से इन अद्भुत वचनों के बारे में सवाल किया कि "सज्जन लोग उजड़ जाएं और दुष्ट बसते रहें, ऐसा क्यों ?" गुरु जी का जवाब था— "सज्जन व्यक्ति उजड़ कर जहाँ भी जाएंगे अपने गुणों की खुशबू फैलाएंगे और दुष्ट एक ही जगह बसे रहें तो अच्छा है, नहीं तो जहाँ भी जाएंगे वहाँ का वातावरण भी दूषित कर देंगे।" इस प्रकार का जवाब पाकर भाई मरदाना जी के अतंरमन की आँखें खुलती हैं। गुरु जी के साथ जितना ज्यादा समय भाई मरदाना जी बिताते गए, उतना ही भाई मरदाना जी पर अध्यात्म का रंग चढ़ता गया। गुरु नानक पातशाह की अमृतमयी बाणी और भाई मरदाना जी की रबाब की मधुर सुरों ने पत्थर-दिलों को भी मोम बना दिया, चाहे वो सज्जन ठग हो, भूमिया चोर हो, वली कंधारी हो, मलिक भागो हो या कौडा राक्षस जैसी प्रवृत्ति वाले लोग हों।

गुरु जी के संग धर्म प्रचार-यात्राओं के दौरान अफगानिस्तान में कुरम (खुरम) नदी के किनारे स्थित कुरम नगर में भाई मरदाना जी ने परलोक गमन किया। वहाँ पर उनकी स्मृति में एक यादगार बनी हुई है। उनके अन्तिम संस्कार के संदर्भ में गुरु नानक पातशाह ने उनसे पूछा कि "आपके अंतिम संस्कार के पश्चात आपकी समाधि किस प्रकार की तैयार करवाई जाए?" इस पर भाई मरदाना जी का जवाब था— "जब मेरी आत्मा शरीर रूपी समाधि से निकल जाएगी तो फिर इसको पुन: पत्थर या ईंटों की समाधि में क्यों कैद किया जाए! मैं तो अपनी आत्मा को केवल अपने शरीर का साथी समझता हूँ।"

गुरु नानक पातशाह की गोद में 'सति करतार, सति करतार' कहते हुए भाई मरदाना जी परम ज्योति में समा गए। उनकी रबाब की तारों की गूंज जब तक सूर्य-चांद-सितारें हैं, तब तक निरंतर गूंजती हुई अनंत रूहों को झंकृत करती रहेगी। भाई मरदाना जी के गुरु जी के प्रति अथाह प्रेम एवं श्रद्धा-भावना ने उन्हें पूर्ण गुरसिक्ख बनाया। वे सबके लिए सिक्खी की मिसाल बन गए।

भक्त पीपा जी की सामाजिक चेतना

*–श्री ललित शर्मा**

वीरता की अभिव्यक्ति का माध्यम केवल युद्ध करना ही नहीं होता, अपितु यह अभिव्यक्ति जनसेवा, सच्ची भक्ति-साधना तथा विराट सामाजिक चेतना जाग्रत करने के माध्यम से भी होती है। पश्चिम भारत के मध्ययुगीन भक्ति-काल में महान समाज सुधारक राजर्षि-संत भक्त पीपा जी ने अपनी उक्त प्रकार की सेवा व चेतना-भावना से यह सिद्ध कर दिखाया कि समाज और भक्ति-सुधार की कर्ममयी भावना ऐसी भी हो सकती है जिसके करने से व्यक्ति सदैव के लिये काल, कर्म के अनावश्यक बंधनों से सदा के लिए छुटकारा पा सकता है।

राजस्थान के झालावाड़ जिला मुख्यालय के निकट आहू और काली सिन्ध नदियों के संगम पर बना प्राचीन जलदुर्ग गागरोन, भक्त पीपा जी की जन्म-स्थली और शासन-स्थली रहा है। भक्त पीपा जी, खीची राजवंश के एक छत्र् शासक थे। इसी नदी-संगम पर उनकी भक्ति-साधना की गहन गुफा, समाधि और विशाल आश्रम एवं मंदिर है। उनका जन्म १४वीं सदी के अन्तिम दशकों में गागरोन के खीची चौहान राजवंश में हुआ था।[१] वे यहां के वीर, धीर व कुशल शासक थे। शासक रहते हुए उन्होंने कई शत्रुओं से लोहा लेकर विजय प्राप्त की थी।[२] परन्तु, युद्धोन्माद, हत्या, रक्तपात तथा जल से जमीन तक के रक्तपात को देखकर उन्होंने तलवार तथा गागरोन की राजगद्दी का त्याग कर दिया था।[३] इसके पश्चात् उन्होंने काशी जाकर भक्त रामानंद जी का शिष्यत्व ग्रहण किया[४] और वे भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त धंना जी, भक्त सैण जी के गुरु-भाई बने।

भक्त पीपा जी का जीवन-चरित्र देश के महान समाज-सुधारकों में एक नायाब नमूना है। उनकी समाज-सुधार की सुन्दर विचारधारा और अद्वितीय कर्म-भावना के कारण ही वे भक्तमाला के आदर्श मोती बनकर लोकवाणियों में गाये गये। भक्त पीपा जी ने अपनी पत्नी माता सीता सहचरी के साथ राजस्थान में भक्ति एवं समाज-सुधार की चेतना का अलख जगाने का विलक्षण कार्य किया।[५] उन्होंने उत्तरी भारत के सारे सन्तों को राजस्थान के गागरोन में आने का न्यौता दिया। भक्त रामानंद जी, भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त धंना जी सहित अनेक सन्त-मण्डलियों और धर्म-यात्रा-संघों का राजस्थान की धरती पर आगमन हुआ और युद्धों, वर्गों तथा धर्म-आडम्बरों एवं भेदभावों में उलझते राजस्थान में भक्ति व समाज-सुधार की एक महान क्रान्ति-

*'अनहद' जैकी स्टूडियो, १५-मंगलपुरा, झालावाड़– ३२६००१ (राजस्थान)

चेतना का सूत्रपात हुआ।[६] भक्त पीपा जी और माता सीता सहचरी ने उसी समय अपना समस्त राज्य, वैभव त्याग कर[७] गागरोन से गुजरात (द्वारिका) तक संतों की धर्म-यात्रा का नेतृत्व किया। वहां उन्होंने परदु:खकातरता, परपीड़ा तथा परव्याधि की पीड़ा की अनुभूति करने वाली प्रभु-विचारधारा को जन-जन के लिये समान भावों से सिद्ध किया। मीराबाई भक्त पीपा जी की भक्ति-साधना से बड़ी प्रभावित थी।

मध्य काल में देश की सामाजिक स्थिति विषमतापूर्ण हो गयी थी। भृत्यों ने स्वामियों को पकड़ लिया। धर्म तथा सच्ची भक्ति रसातल की ओर जाने लगी। पण्डित मठाधीश हो गये। खलों ने सज्जनों को पराभूत कर दिया। जाति, वर्ण में भेद हो गये। अधम-उत्तम का कोई पारखी नहीं रहा। ऐसे समय में विशेषकर अपने गुरु भक्त रामानंद जी की आज्ञा से भक्त पीपा जी ने पश्चिम भारत को संभाला और अपनी भक्ति-साधना, आत्मविश्वास, साहस एवं निर्भीकता के साथ प्राचीन और रूढ़ मान्यताओं व अवधारणाओं को तोड़कर समाज में चेतना जगाने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। उन्होंने पूर्ण समर्पित भाव से सपत्नीक गांव-गांव, बस्ती-बस्ती पैदल घूमकर ब्रह्मज्ञान, नैतिक तथा समन्वय भावों का अलख जगाया, जो उनके निम्न विचारों से प्रमाणित होता है। निम्न बिन्दुओं के माध्यम से हम उनकी सामाजिक अन्तश्चेतना को देखेंगे : —

जात-पांत का खण्डन : भक्त पीपा जी जीवमात्र् की समानता के प्रबल पक्षधर थे। उनके मतानुसार ईश्वर के समक्ष सभी जीव समाज में समान हैं। ईश्वर के दरबार में छोटे-बड़े तथा राजा-रंक का कोई भेदभाव नहीं है।

उनका मानना है कि विप्र-शूद्र सब एक ही मार्ग से आये हैं तथा सभी के माता-पिता भी एक हैं तो भेदभाव किसलिये? यह बात उन्होंने केवल वैचारिक धरातल पर ही नहीं की वरन् उन्होंने इसकी क्रियान्विती भी करके दिखायी।

मूर्ति-पूजा के प्रति अविश्वास : उनकी मान्यता है कि ईश्वर समाज के सभी प्राणियों में परिव्याप्त है। उनके अनुसार, जो मूर्ति स्वयं ही नश्वर है, उसकी क्या पूजा की जाये? उनकी मान्यता है कि पूजा तो उस अलख निरंजन, अविगत और अविनाशी परमतत्व की करनी चाहिये जो समूची मानवता का परम स्रोत है।[८] सार तो ईश्वर की उपासना-मात्र में है, उसके प्रकारों के भ्रमजाल में उलझने से नहीं। अन्ध धार्मिकता के प्रति उनका खण्डन स्पष्ट है।

सच्चे गुरु की महत्ता : भक्त पीपा जी ने समाज को सही दिशा-निर्देश के साथ भक्ति-साधना के निर्देश हेतु सच्चे गुरु की महत्ता एवं अनिवार्यता को अत्यावश्यक माना है। उनका मानना है कि सच्चा गुरु वही है जो पूरे समाज, धर्म में समन्वय-भाव रखता है। उनके मतानुसार, परमतत्व को सद्गुरु की सहायता से ही यथार्थ रूप में अनुभूत किया जा सकता है।[९]

श्रम-साधना और कर्म का महत्व : अपनी दृढ़ सामाजिक चेतना-शक्ति से भक्त पीपा जी ने चतुर्वर्ण के प्रतिरोध-स्वरूप एक नवीन और

पांचवा वर्ण सृजित किया, जिसमें श्रम की प्रधानता, कर्म का महत्व और अत्याचार का त्याग था। यह एक ऐसा नवीन सामाजिक वर्ण था, जिसमें ऊंच-नीच तथा जाति-बन्धन पूर्णतया लुप्त थे। भक्त पीपा जी का यह मौलिक सामाजिक कार्य उस युग में वास्तव में चतुर्वर्ण परम्परा के विरुद्ध एक प्रतिरोधात्मक आन्दोलन था।

वे सामाजिक चेतना में समन्वय के महान आख्याता इसलिये हैं कि उन्होंने उस ब्रह्म के साथ साक्षात्कार कराया जिसकी खोज में बंधा मानव आजीवन भटकता है। उन्होंने सच्चे अर्थों में ब्रह्म के स्वरूप की पहचान पर जोर देते हुए समाज से कहा कि उस ब्रह्म की पहचान तो स्वयं अपने मन में अनुभव करने से है।

रूढ़ियों का दृढ़ विरोध : भक्त पीपा जी की सामाजिक चेतना में रूढ़ियों की समाप्ति का कार्य अति महत्वपूर्ण है। उस युग में यह भी कम आश्चर्यजनक घटना नहीं थी कि भक्त पीपा जी के साथ ही उनकी जीवन-संगिनी भी प्रभु-भक्त बनी। इतना ही नहीं, उनकी पत्नी ने अपने संत-पति का साथ देकर समाज के पतिव्रत धर्म का अच्छी प्रकार निर्वाह किया। यह वो युग था जब यवनों द्वारा महिलाओं पर अत्याचार, व्यभिचार हो रहे थे और राजपूतों में सर्वाधिक पर्दा-प्रथा प्रचलित थी। उसी समय भक्त पीपा जी ने अपनी पत्नी माता सीता सहचरी की पर्दा-प्रथा सर्वप्रथम तोड़कर समाज में यह प्रमाणित किया कि जिसमें आत्मबल, समाज-सेवा और ईश्वर-भक्ति के सच्चे भाव हैं उसे पर्दा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वास्तव में सैकड़ों बरसों पूर्व का यह एक ऐसा अद्धितीय समाज-सुधार था, जिससे नारी-समाज में जागृति और इच्छा-शक्ति के भाव उत्पन्न हुए, जिस कारण महिलाओं ने आवश्यकता पड़ने पर युद्ध व संघर्ष कर स्वरक्षा ही नहीं की वरन् अनेक राज्यों का शासन भी सफलतापूर्वक संचालित किया।

समाज की रूढ़ि में भक्त पीपा जी के इस कार्य की महत्ता पर प्रसिद्ध सामाजिक विचारक मैक्स आर्थर मैकालिफ ने सुन्दर टिप्पणी लिखी है — Probably the first effort in modern time in india to abolish the tyranny of the Parda by Pipa[१०] बाद में भक्त पीपा जी ने आजीवन माता सीता सहचरी को बिना पर्दे के ही समाज में सार्वजनिक रूप से रखा, जबकि उस युग में राजपूतों में घोर पर्दा-प्रथा का प्रचलन था तथा उस प्रथा को तोड़ना कोप का भागी बनना था।

समाज-चेतना : भक्त पीपा जी के जीवन की सबसे बड़ी सामाजिक विशेषता यह है कि वे समाज-सुधार व सच्ची भक्ति-साधना का आख्यान करने के लिए राजा होते हुए अपना सर्वस्व वैभव त्याग कर संत बने। भारतीय मध्ययुगीन इतिहास के पन्नों में इस प्रकार का पहला और दुर्लभ उदाहरण कहीं देखने को नहीं मिलता। भक्त पीपा जी जिस खीची चौहान क्षत्रिय जाति से संबंधित थे, उसमें युद्ध की प्रधानता थी। उनके गुरु भक्त रामानंद जी का विचार यह था कि उन्हें उनके

समाज-सुधार के आन्दोलन में उस समय के पीड़ित, शोषित वर्ग के कल्याण के लिये एक वीर और आदर्श शिष्य की आवश्यकता थी, क्योंकि विशेष रूप से राजपूत, शासन करने और मारकाट करने में सबसे आगे थे। मध्य युग में सत्ता हाथ से जाने के बाद भी वे आपस में लड़ते और शोषण करते पाये जाते थे— विशेषकर यह बड़ी समस्या उत्तरी भारत (राजपूताना-गुजरात-सौराष्ट्र-मालवा) में थी। यह समस्या कैसे सुलझाई जाये, यह विडम्बना भी थी। उसी समय इस समस्या को सुलझाने के लिये भक्त रामानंद जी को योग्य शिष्य भक्त पीपा जी मिल गये, जिन्होंने उनके निर्देश पर उस क्षेत्र के अनेक राजपूत राजाओं, सरदारों को भक्ति-मार्ग में दीक्षित कर के समाज-सुधार, समन्वय-कार्यों की ओर मोड़ दिया। इससे समाज में शांति-सहभागिता स्थापित हुई और नवीन सामाजिक चेतना का उद्भव हुआ। स्वयं भक्त पीपा जी ने कटे-फटे वस्त्रों की सिलाई का कार्य कर समाज में स्वावलम्बन की भावना को विकसित किया।[११]

दुर्व्यसन की भर्त्सना : भक्त पीपा जी समाज में व्यक्ति के आचरण व जीवन-मूल्यों के विघटन के प्रति बड़े सजग और जागरूक थे। वे नशीली वस्तुओं के सेवन व मांसाहार को वर्जित कर्म मानते थे। उन्होंने इन दुर्व्यसनों से दूर रहने की महत्वपूर्ण बात भी की।

उन्होंने दृढ़तापूर्वक समाज के उन संतों की भी तीव्र भर्त्सना की जो मठाधीश बनकर व वैभवशाली वस्त्र धारण कर मन में कपट रखते थे।

उन्होंने सामाजिक समन्वय की मिसाल हरे-भरे गुलदस्ते से दी। उन्हें अपने देश से अथाह स्नेह था। इस देश की मिट्टी को अपनी आंखों का काजल बनाकर उन्होंने सदियों पहले भारत की बहुरंगी छवि को देखकर जोरदार ढंग से इस देश की उपमा की।

'जो ब्रहमंडे सोई पिंडे' का सूत्र : भक्त पीपा जी समाज में फैले बाहरी आडम्बरों, थोथे कर्मकाण्डों, रूढ़ियों के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था कि ईश्वर निराकर, निर्गुण है। वह बाहर-भीतर, घट-घट में व्याप्त है। वह अक्षत है और जीवात्मा के रूप में प्रत्येक जीव में व्याप्त है। उनके अनुसार मानव-मन में ही सारी सिद्धियां और वस्तुएं व्याप्त हैं। उनका यह विराट चिन्तन 'जो ब्रहमंडे सोई पिंडे' के विराट सूत्र को मूर्त करता है और तभी वे अपनी काया में ही समस्त निधियों को पा लेते हैं। फिर किसी बाहरी मंदिर या तीर्थ व पूजा आदि की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। पवित्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब में समादृत, गागरोन की इस महान विभूति का यह पद इसी भावभूमि पर खड़ा हुआ भारतीय भक्ति साहित्य का कण्ठहार माना जाता है :

कायउ देवा काइअउ देवल
काइअउ जंगम जाती।।
काइअउ धूप दीप नईबेदा
काइअउ पूजउ पाती।।१।।
काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई।।
ना कछु आइबो ना कछु जाइबो

राम की दुहाई।।१।।रहाउ।

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै।।

पीपा प्रणवै परम ततु है

सतिगुरु होइ लखावै।।२।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९५)

भक्त पीपा जी ने समाज के लोकव्यापी समन्वय के लिये अपने विचारों में अनुपम अभिव्यक्ति दी जो आज भी प्रासंगिक है। यह कहना असंगत न होगा कि भक्त पीपा जी का रचना-संसार लोकमंगल, सामाजिक चेतना तथा भक्ति-साधना के सच्चे भावों पर आधारित है। आज जब धर्म, नस्ल, जाति, क्षेत्र जैसे तमाम भेदों को गहरा कर मानवता विरोधी ताकतें सक्रिय हैं, ऐसे में महान् संत भक्त पीपा जी की विचारधारा और बाणी की राह ही हमें समन्वयता और अखण्ड मानवता के पक्ष में ले जा सकती है।

सन्दर्भ-

१. पीपा की कथा (हस्तलिखित), क्रम ३०६७१, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के अनुसार बाड़मेर में समदड़ी ग्राम में भक्त पीपा जी मंदिर से प्राप्त सूचना के आधार पर भक्त पीपा जी का जन्म वि.सं. १३८० एवं देहान्त संवत् १४४१ में हुआ था। इसी संवत् को आधार मानकर पीपापंथी समाज भक्त पीपा जी की जयन्ती मनाता है। परन्तु भक्त पीपा जी के जन्म-वर्ष पर विद्वानों में मतभेद है। संत साहित्य मर्मज्ञ बृजेन्द्र कुमार सिंघल के अनुसार, संत पीपा जी वि.सं. १४०० में गागरोन के शासक थे तथा वि.सं. १४२० में वे स्वामी रामानन्द के शिष्य बने। राघवकृत भक्तमाल के अनुसार भक्त पीपा जी वि.सं.१५४०-१५५० में जीवित थे। सिंघल के मतानुसार, भक्त पीपा जी का जन्म वर्ष वि.सं. १४०० से पूर्व रहा है। विद्वान हीरालाल माहेश्वरी अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ राजस्थान लिटरेचर' (पृ. १४७-४८) में संत पीपा जी का जीवन-काल वि.सं. १४४०-१५१० बताते है। विद्वान दिनेश चन्द्र शुक्ल और औंकार नारायण सिंह अपनी पुस्तक 'राजस्थानी भक्ति परम्परा' में भक्त पीपा जी का जन्म वि.सं. १४८२ लिखते हैं। शोध साधना-सीतामऊ (म.प्र.) वर्ष १२ अंक ९, (१९९१ ई.) गागरोन फोर्ट द सेकण्ड साका-ए-मिसिंग लिंक, ए.एच. निजामी (मआसिरे महमूद शाही, पृ. १३४-१३९)

२. शाह अमीता, काशी मार्तण्ड (जगद्गुरु स्वामी रामानन्द की दिग्विजय), पृ. 26

३. पीपा की कथा, पूर्वोक्त

४. शर्मा ललित, राजर्षि संत पीपा जी, पृष्ठ ६५

५. कपूर अवध बिहारी, नवभक्तमाल, ५ खण्ड, भाग-१ पृष्ठ ७

६. दिनेश चन्द शुक्ल, राजस्थान के प्रमुख संत एवं लोक देवता,पृष्ठ १०

७. जुगनू श्री कृष्ण, समाज सुधारक पीपा जी, दैनिक भास्कर, ९ अप्रैल, २००९, पृष्ठ ६

८. चतुर्वेदी राजेश्वर प्रसाद, (टीकाकार), कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ १६, लखनऊ, ७वां संस्करण।

९. सहगल पूरन, संत पीपा जी की कृतियों का संकलन और सम्पादन (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध), १९७२ ई., विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, पृष्ठ २०७-२१० (साषी खण्ड)

१०. (१) शुक्ल दिनेश चन्द , राजस्थान के प्रमुख संत एवं लोकदेवता, पृष्ठ ११८

(२) सहगल पूरन,उक्त पृष्ठ ६० टिप्पणी सं. २ (अ)

११. पीपा की साखी, दादूधाम नरैणा में संग्रहित ग्रन्थ पंचवाणी संग्रह, वि.सं. १६६०, १८५२, १७८२ से व संर्वगी सरह चिंतामणि (गोपालदास कृत) व अनंतदास, पीपा की साखी, ९०१,९०२ पद १९-२८ से साभार।

महान् सिक्ख जरनैल सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिआ

–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'*

अठारहवीं शताब्दी के महान सिक्ख सेनानायकों में सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिया का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। आप वे आदर्श चरित्र वाले सिक्ख जरनैल थे, जिन्होंने दिल्ली फतह कर लाल किले पर 'निशान साहिब' फहराया था और खालसा पंथ को अपूर्व गौरव प्रदान किया था। यही नहीं, सरदार बघेल सिंघ का सिक्का रुहेलखंड की पूरबी सीमाओं और आगरा-इटावा तक चलता था। सिक्खों के प्रभाव को यमुना-पार के इलाकों में ले जाने वाले सिपहसालारों में सरदार बघेल सिंघ का नाम सबसे प्रमुख रहा है।

प्रारंभिक जीवन एवं करोड़ासिंघिआ मिसल के साथ संबंध : सिक्ख इतिहास और परंपरा में सरदार बघेल सिंघ के प्रारंभिक जीवन के विषय में बहुत कम जानकारी मिलती है। भाई कान्ह सिंघ नाभा कृत 'महान कोश' में मात्र यही उल्लेख मिलता है कि आप श्री अमृतसर साहिब जिले के 'झबाल' गाँव के रहने वाले थे। यह गाँव वर्तमान में तरनतारन जिले के अधीन आता है।

सन् १७४८ ई. में जब मिसलों की स्थापना हुई तो सरदार करोड़ा सिंघ ने अपना एक अलग जत्था बनाया जो सरदार साहिब के नाम पर 'करोड़ासिंघिआ मिसल' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सरदार करोड़ा सिंघ पहले करोड़ी मल सेठ थे। आपने नवाब कपूर सिंघ के जत्थे से अमृत छका और 'सिंघ' सजकर 'सरदार करोड़ा सिंघ' बन गये। आप पंजगढ़ के रहने वाले थे, इसलिए इस मिसल को 'पंजगढ़िया मिसल' भी कहा जाता है। इस मिसल का वास्तविक प्रभाव जलंधर के दोआबा क्षेत्र में था। धीरे-धीरे इसके योद्धाओं ने सतलुज पार के इलाकों पर भी अपना दबदबा कायम कर लिया।

अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों के समय भी इस मिसल ने बड़ी बहादुरी के साथ संघर्ष किया और कई बार अब्दाली की फौज़ के दाँत भी खट्टे किये। जत्थेदार मसतान सिंघ और सरदार करम सिंघ इस मिसल के श्रेष्ठ योद्धाओं में से थे।

सरदार बघेल सिंघ सन् १७४८ ई. में करोड़ासिंघिआ मिसल में शामिल हुए। इस समय यह मिसल 'तरुणा दल' का अंग थी। 'तरुणा दल' यानी ३५-४० वर्ष से कम आयु वाले युवा सिंघों का दल। इस हिसाब से देखा जाये तो सरदार बघेल सिंघ का जन्म संभवत: सन् १७२०-१७२५ ई. के आस-पास ही हुआ होगा।

सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिआ अपनी मिसल के एक बेहद सक्रिय और दिलेर योद्धा थे।

*१/३३८ स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना–१४११०१ फोन : ६२३९६-०१६४१

सन् १७६१ ई. में जब सरदार करोड़ा सिंघ का निधन हुआ, तब सरदार बघेल सिंघ को मिसल का नया जत्थेदार नियुक्त किया गया।

सरदार बघेल सिंघ की विजय-यात्राएं : जत्थेदार बनते ही सरदार बघेल सिंघ ने अपनी मिसल की शक्ति बढ़ानी शुरू कर दी। बहुत जल्दी जत्थे की गिनती तीस हजार सिंघों तक जा पहुँची। सरदार साहिब के नेतृत्व में जत्थे ने सतलुज पार करके पूरब की ओर मुहिमें आरंभ की। धीरे-धीरे पूरबी इलाकों में मिसल की शक्ति बढ़ती गई।

सन् १७६४ ई. जब सिक्खों ने सरहिंद को फतह किया, तब करनाल के उत्तरी इलाके— छलौदी, जमीतगढ़, खुरदीन और किनोड़ी के कसबे करोड़ासिंघिआ मिसल के अधीन आ गये।

फरवरी, सन् १७६४ ई. में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में सिक्ख जत्थों ने यमुना-पार के इलाकों पर धावा बोला और एक बड़े क्षेत्र को अपने अधिकार में ले लिया। उन्हीं दिनों रुहेला नवाब नजीबुद्दौला के विरुद्ध सिक्खों ने राजा जवाहर मल की मदद की थी।

यह वो समय था जब अहमद शाह अब्दाली सिक्खों के छापामार युद्ध से बेहद परेशान था। मई, १७६७ ई. में जब सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने यमुना पार कर रुहेलखंड के नवाब नज़ीबुद्दौला पर हमला किया तो अब्दाली ने अपने एक सिपहसालार ज़हान ख़ान को नजीब की मदद करने के लिए भेजा। शामली तथा कैराना में सिक्खों और जहान खान के लश्कर में घमासान युद्ध हुआ। सिक्खों ने अफगानों के बुरी तरह से दाँत खट्टे किये और आगे निकल गये।

सन् १७७३ ई. में सिक्खों ने सरदार करम सिंघ और सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में जलालाबाद को फतह किया।

सन् १७७५ ई. में सरदार राय सिंघ भंगी, सरदार तारा सिंघ घेबा और सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने एक बार फिर यमुना पार की और लखनौती, गंगोह, देवबंद, ननौता, गौसगढ़ आदि शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। यहाँ के हाकिम जाब्ता ख़ान ने पचास हज़ार का नज़राना देकर सिक्खों से संधि की। सरदार बघेल सिंघ ने जाब्ता ख़ान को अमृत छकाया और उसका नाम 'धरम सिंघ' रख दिया। यहाँ तक कि उसका बेटा गुलाम कादिर भी सिंघ सजा और 'पिआरा सिंघ' बन गया। इस घटना के बाद रुहेले, सिक्खों के मित्र बन गये।

सन् १७७६ ई. में रुहेलों द्वारा मदद की प्रार्थना करने पर सिक्खों ने सहारनपुर के फौज़दार अबुल कासिम, जो मुगल बादशाह के वज़ीर अब्दुल अहद का भाई था, पर धावा बोला। मुजफ्फरनगर के निकट अमीर नगर में भयानक जंग हुई, जिसमें अबुल कासिम मारा गया।

सन् १७७९ ई. में पटियाला के राजा अमर सिंघ ने सरदार बघेल सिंघ के कुछ इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया तो सरदार साहिब ने अमर सिंघ को धूल चटाने के लिए पटियाला पर हमला कर दिया।

स्थिति बिगड़ती देख राजा अमर सिंघ ने संधि कर ली और अपने पुत्र साहिब सिंघ को सरदार बघेल सिंघ के पास भेजकर अमृत छकवाया।

इस प्रकार सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने गंगा-यमुना दोआब से लेकर रुहेलखंड में पीलीभीत तक और दक्षिण-पूरब में अलीगढ़, खुर्जा, चंदौसी, आगरा, इटावा तक अपना कब्ज़ा जमाया।

इन दिनों सरदार बघेल सिंघ का इतना प्रभाव था कि पंजाब और दिल्ली के मध्य आवागमन के लिए सरदार साहिब से आज्ञा लेनी पड़ती थी।

दिल्ली-फतह की दास्तान : सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिआ की अनेक विजयों में सबसे महत्वपूर्ण है— 'दिल्ली-विजय'। मार्च, सन् १७८३ ई. में सरदार साहिब ने अन्य सिक्ख सेनानायकों एवं जत्थों को लेकर दिल्ली पर आक्रमण किया और कुछ ही समय में फतह हासिल कर लाल किले पर खालसे का 'निशान साहिब' फहरा दिया। मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय ने अपने वज़ीर आजम गौहर को सिक्खों के साथ संधि करने के लिए भेजा। संधि की शर्तें तय हुईं कि खालसे को तीन लाख जुर्माना अदा किया जाये। शहर के दीवानी हक सरदार बघेल सिंघ को दे दिये जायें और जब तक दिल्ली में सभी ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान की स्थापना न हो जाये, तब तक सरदार साहिब चार हजार सिक्खों के जत्थे के साथ दिल्ली में ही रहें।

दिल्ली में ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान का निर्माण : सरदार बघेल सिंघ एक अत्यंत समर्पित गुरसिक्ख थे। दिल्ली में ऐतिहासिक गुरु-स्थानों को स्थापित करने के लिए आपने अथक प्रयास एवं परिश्रम किया।

गुरुद्वारा बंगला साहिब : मुगल बादशाह के साथ संधि होने के बाद तुरंत ही सरदार साहिब ने दिल्ली में सिक्ख इतिहास से संबंधित महत्वपूर्ण स्थानों की खोज शुरू कर दी। सबसे पहले माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी के दिल्ली-प्रवास के स्थान पर गुरुद्वारा साहिब का निर्माण आरंभ करवाया गया। इसके साथ ही अष्टम पातशाह साहिब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी के ज्योति-जोत समाने के स्थान पर भव्य गुरुद्वारा साहिब तामीर करवाया गया। आज यह गुरुधाम 'गुरुद्वारा बंगला साहिब' नाम से प्रसिद्ध है।

गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब : सरदार बघेल सिंघ ने दिल्ली में वह स्थान भी खोज निकाला, जहाँ शहीदी के बाद नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी के शीश रहित पावन शरीर का दाह-संस्कार किया गया था। दरअसल, एक सिक्ख भाई लक्खी शाह बनजारा ने गुरु जी की शीशविहीन पावन देह को अपने घर में रखकर, घर को ही आग लगाकर दाह-संस्कार को सम्पन्न किया था।

सरदार साहिब ने इस पवित्र स्थान पर गुरुद्वारा साहिब का निर्माण आरंभ करवाया। यह गुरुधाम 'गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब' नाम से विख्यात हुआ।

गुरुद्वारा सीसगंज साहिब : सबसे कठिन कार्य

उस स्थान की तलाश थी जहाँ नवम् पातशाह को शहीद किया गया था। सरदार बघेल सिंघ ने निरंतर प्रयास जारी रखे। बड़ी कोशिशों के बाद उस मशक वाले की बेटी मिल गई, जिस मशक वाले ने शहादत के बाद गुरु जी के पावन शरीर को स्नान करवाया था। मशक वाले की बेटी अब बेहद बूढ़ी हो चुकी थी। उस वृद्धा ने गुरु जी की शहादत वाले स्थान की पहचान करके निशानदेही की। वह स्थान किसी अन्य स्थानीय सत्ताधिकारी के कब्जे में था। एक छोटी-सी सैनिक मुठभेड़ के बाद सरदार साहिब ने उस स्थान को अपने अधिकार में ले लिया और वहाँ एक चबूतरा बनवा कर गुरुद्वारा साहिब के निर्माण की प्रक्रिया आरंभ कर दी। यह गुरुधाम आज 'गुरुद्वारा सीसगंज साहिब' नाम से विश्व-विख्यात है।

बाद में, जींद रियासत के शासक राजा सरूप सिंघ ने सन् १८६० ई. के आस-पास गुरुद्वारा सीसगंज साहिब की वर्तमान इमारत तामीर करवाई।

स्वाभिमानी योद्धा : सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिआ अत्यंत स्वाभिमानी योद्धा थे। सरदार साहिब जब दिल्ली से वापस आने लगे तब मुगल बादशाह शाह आलम ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। स्वाभिमानी सरदार साहिब ने बादशाह के हजूर में पेश होने से इन्कार कर दिया। मुगल बादशाह ने कहा, "वे जैसे आना चाहते हैं, वैसे आयें!"

इस पर सरदार बघेल सिंघ बड़ी शान के साथ हाथी पर सवार होकर, अपने जत्थे के साथ बादशाह से मिलने लाल किले पहुँचे। सरदार साहिब ने दरबार में पहुँच कर जयकारा गजाया और गरज कर 'फतहि' बुलाई। बादशाह ने भी अपने सभी लोगों को उसी प्रकार 'फतहि' का उत्तर 'फतहि' के साथ देने को कहा। सरदार साहिब को बादशाह के समकक्ष ही आसन प्रदान किया गया। रुखसत के वक़्त मुगल बादशाह ने सरदार बघेल सिंघ को एक हाथी, सोने की जंजीर, पाँच घोड़े और बहुत-से तोहफे देकर विदा किया।

इस मुलाकात में बादशाह ने काफी देर तक सरदार साहिब के साथ विचार-विमर्श किया। बादशाह सरदार साहिब के विचारों से बहुत प्रभावित हुआ।

आदर्श चरित्र : सरदार बघेल सिंघ अत्यंत उच्च एवं आदर्श चरित्र वाले गुरसिक्ख थे। आप मज़लूम की रक्षा करने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। उदाहरण के तौर पर एक घटना उल्लेखनीय है। सन् १७७३ ई. में सरदार साहिब को सूचना मिली कि जलालाबाद के हाकिम मुहम्मद खान ने एक ब्राह्मण की कन्या को जबरदस्ती अगवा कर लिया है। ख़बर मिलते ही सरदार साहिब ने एक हजार किलोमीटर दूरी की परवाह न की और जत्था लेकर तुरंत जलालाबाद पहुँचे तथा मुहम्मद खान को दंडित किया। कन्या को सम्मान सहित उसके घर पहुँचाया।

अंतिम समय तक सिक्खों का नेतृत्व एवं सहयोग : दिल्ली-फतह के बाद भी अगले बीस

वर्षों तक सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिआ सिक्खों का कुशलतापूर्वक नेतृत्व करते रहे। जिस सिक्ख सरदार को जब भी आपकी सहायता की आवश्यकता पड़ी या जिसे भी आपने किसी संकट में घिरा पाया, आप तुरंत मदद के लिए पहुंचे।

सन् १७८० ई. में जब दिल्ली के वज़ीर अब्दुल्ला खान ने शहजादे फरज़ंद को पटियाला के अमर सिंघ के ऊपर हमला करने भेजा तो सरदार साहिब ने उसी समय जत्थे के साथ पटियाला पहुँच कर राजा अमर सिंघ की मदद की और शहज़ादा फरज़ंद को परास्त किया।

इसी तरह १७८८ ई. में जब मराठा मनराव ने पंजाब की ओर नज़र उठाई तो सरदार बघेल सिंघ ने उसके लश्कर को घेर कर, उसे पराजय स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया।

सन् १७९८ ई. में अंग्रेज जनरल जार्ज थॉमस ने जब जींद रियासत पर आक्रमण किया तो सरदार साहिब तुरंत सहायता के लिए जींद जा पहुँचे।

परलोक-गमन : इस प्रकार सिक्खों को अपना श्रेष्ठ एवं आदर्श नेतृत्व प्रदान करते हुए महान् जरनैल सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिआ सन् १८०३ में परलोक गमन कर गये।

सरदार साहिब द्वारा ११ मार्च, सन् १७८३ ई. वाले दिन दिल्ली-फतह करने की घटना सिक्ख इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज है।

कविता

नववर्ष का शुभ आगाज़

–डॉ. मनजीत कौर*

नववर्ष नानकशाही का हुआ है शुभ आगाज़।
आओ! मिलकर करें हम सब अरदास!
प्रभु-दर पर हो हमारी यही फरियाद!
रहे न कोई अब किसी का मोहताज!
छोड़ें सब चिन्ताओं वाली राह!
लोग क्या कहेंगे, इसकी न करें परवाह!
सर्वकला समर्थ प्रभु पर विश्वास रखें!
उसी से सब कुछ मिलने की आस रखें!
नेक नियति से करे हर कोई अपना काम।
आराम तो बस है, सबके लिए हराम।
बेशकीमती है जीवन, इसे व्यर्थ न गवाएं!
हर पल को चलो हम, सार्थक बनाएं!
पर्यावरण स्वच्छता पर भी ध्यान लगाएं!
प्राकृतिक संसाधनों को सदुपयोग में लाएं!
आओ! मिलकर हम सब कुछ पेड़ लगाएं!
कोई परोपकार तो हम भी कर जाएं!
चिन्तन करें निरन्तर प्रभु का,
होंगी खुशियां अनंत अपार!
नववर्ष लाए मानवता हेतु,
अमन-शान्ति का अनुपम उपहार!

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

उच्च कोटि के जरनैल एवं शूरवीर योद्धा : अकाली फूला सिंघ

*-डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

खालसा की हुकूमत के वक्त जो उच्च कोटि के जरनैल, शूरवीर योद्धा और महान सिक्ख व्यक्ति केवल देश-प्रेम से वशीभूत होकर तथा पंथक जज्बे के साथ सेवा (युद्ध) के मैदान में आए और फिर शहादत प्राप्त कर गए, उनमें अकाली फूला सिंघ का नाम अति सम्मान के साथ लिया जाता है। सरदार हरी सिंघ नलवा की भांति वे भी उस समय के जननायक की हैसियत से युद्धों में शामिल होते रहे। अकाली फूला सिंघ का लोगों में बहुत नाम एवं सम्मान था। एक ओर वे श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार थे, तो दूसरी ओर निडर व रहमदिल सेनानायक भी थे। तभी तो, आपने महाराजा रणजीत सिंघ को किसी मामले में सजा सुनाए जाने के बाद उनकी विनयशीलता, नम्रता, श्रद्धा-भावना देखकर उन्हें क्षमा भी कर दिया था। सिक्ख इतिहास में उनकी जो लामिसाल शहादत दर्ज है, वह एक सच्चे सिक्ख के आचरण की दृढ़ता, परिपक्वता और उनके द्वारा की जाती अरदास की महानता को दर्शाती है कि एक सच्चा सिक्ख वाहिगुरु के समक्ष की गई अपनी अरदास पर अडिग रहने हेतु अपनी जान तक कुर्बान कर देता है। इसी भावना को ही सही मायनों में प्राण जाए पर वचन न जाए 'कहां' जाता है।

बांगड़ क्षेत्र के जिला संगरूर के एक छोटे-से गांव शीहां में सरदार ईशर सिंघ तथा माता हरी कौर के घर सन् १७६१ ई. में अकाली फूला सिंघ का जन्म हुआ। उनके छोटे भ्राता का नाम भाई संत सिंघ था। उनके पिता सरदार ईशर सिंघ निशानां वाली मिसल में शामिल होकर कई युद्धों में भाग ले चुके थे। उन दिनों क्रूर व ज़ालिम मुगल शासक अहमद शाह अब्दाली हमारे देश पर आक्रमण पर आक्रमण कर रहा था। बड़ा घल्लूघारा में निशानां वाली मिसल की ओर से लड़ते हुए सरदार ईशर सिंघ गंभीर रूप से घायल हो गए और (घर आकर) अकाल प्रस्थान करने से पूर्व उन्होंने अकाली फूला सिंघ व भाई संत सिंघ को अपने प्रिय मित्र बाबा नारायण सिंघ (बाबा नैणा सिंघ) के सुपुर्द करते हुए कहा, "इन्हें भी पंथक सेवा के मैदान में भेज देना!"

बाबा नारायण सिंघ स्वयं मिसल शहीदां में शामिल थे। सरदार ईशर सिंघ के देहांत के बाद अकाली फूला सिंघ ने अपनी मां माता हरी कौर

**बी-एक्स-१२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

तथा बाबा नारायण सिंघ की आगवानी में गुरबाणी पढ़ी और कंठस्थ की। फिर शस्त्र-विद्या प्राप्त की। घुड़सवारी करने, तेग चलाने आदि में तो उनका मुकाबला करना मुश्किल था। फिर उनकी माता जी भी प्रभु-चरणों में जा विराजमान हुए। अकाली फूला सिंघ ने अकाली बाणा (निहंगों वाला पहनावा) धारण कर लिया और बाबा नारायण सिंघ से अमृत-पान कर मिसल शहीदां में शामिल हो गए। तब उनकी आयु १४ वर्ष थी। वे इतने बड़े दानी व दयालु थे कि उन्होंने अपनी समस्त ज़मीन व जायदाद जरूरतमंद व्यक्तियों को दे दी। तदुपरांत श्री अनंदपुर साहिब चले गए और गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल में जुट गए।

मिसल शहीदां में बाबा नारायण सिंघ को उच्च पद प्राप्त था, जो कि उनके देहावसान के बाद अकाली फूला सिंघ को मिल गया। वे कुछ युद्धों में शामिल हुए और वीरतापूर्वक लड़े। खालसा पंथ में उनका सम्मान व प्रभाव दिन-प्रति-दिन बढ़ता चला गया। सन् १८०० ई. में अकाली फूला सिंघ श्री अनंदपुर साहिब से श्री अमृतसर साहिब चले आए। यहीं पर गुरुद्वारा प्रबंध में पैदा हो चुकी त्रुटियों को दूर करने में जुट गए। उन्होंने पवित्र सरोवर की सेवा करवाई और श्री अकाल तख्त साहिब का प्रबंध स्वयं संभाल लिया। वे अति प्रसिद्ध जत्थेदार हुए हैं।

इतिहास साक्षी है कि १८०१-१८०२ ई. के दरमियान महाराजा रणजीत सिंघ ने श्री अमृतसर साहिब को खालसा राज्य में शामिल करने हेतु इस शहर पर चढ़ाई कर दी। यहां पर बहुत-से छोटे-छोटे सरदार काबिज़ थे, जो कि मिसल भंगियां में से थे। अकाली फूला सिंघ ने बीच-बचाव करते हुए टकराव न होने दिया और समझौता करवाकर मामला निपटा दिया। श्री अमृतसर साहिब पर महाराजा रणजीत सिंघ का कब्ज़ा करवा दिया। यदि वे ऐसा न करते, तो सिक्खों के आपसी टकराव में बहुत खून-खराबा होता। महाराजा रणजीत सिंघ ने अकाली जत्थे की आर्थिक मदद करते हुए बहुत-सी जागीर उन्हें दान कर दी। सिक्ख संगत ने उनकी सराहना की।

सन् १८०७ ई. में सिक्खों की कसूर (अब पाकिस्तान में) पर चढ़ाई हुई। कसूर का पठान हाकिम कुतुबुद्दीन तैयारी के साथ मुकाबला करने को डट गया। महाराजा रणजीत सिंघ ने अकाली फूला सिंघ के दल को मदद हेतु बुला लिया। इस लड़ाई में अकाली फूला सिंघ की वीरता देखकर सभी जरनैल वाह-वाह करने लगे। महाराजा रणजीत सिंघ ने दल अकाली को और जागीर दे दी। इसके पश्चात् अकाली फूला सिंघ कुछ समय के लिए श्री दमदमा साहिब में रहे और फिर श्री अनंदपुर साहिब चले आए। जब सिक्खों ने मुलतान और बहावलपुर (अब पाकिस्तान में) पर आक्रमण किए, तब अकाली फूला सिंघ ने जोश

व ज़ज़्बे के साथ भाग लिया। मुलतान का अंतिम युद्ध, जो कि सन् १८१७-१८१८ में जारी रहा, उसे खत्म करने का और मुलतान का प्रसिद्ध दुर्ग फ़तह करने का श्रेय अकाली फूला सिंघ को मिला।

मुलतान के दुर्ग पर विजय प्राप्त करने हेतु पहले उसकी एक दीवार पर तोपों के गोले बरसा कर उसे गिराया गया। तत्पश्चात् जयकारे गुंजाते व तेग लहराते हुए अकाली सिंघ अकाली फूला सिंघ के नेतृत्व में दुर्ग में दाखिल हुए। हाथों-हाथ लड़ाई में नवाब मुज़फ्फर खान को मार डाला। इसके एक वर्ष बाद कश्मीर पर विजय प्राप्त करने के अवसर पर पहाड़ियों पर चढ़ाई करने तथा ऊंचे मोर्चों पर बैठे दुश्मनों को मारने का काम भी अकाली फूला सिंघ तथा बहादुर दल (जत्थे) ने किया। बेशक संपूर्ण खालसा फ़ौज ही अति बहादुर, निर्भय और दक्ष थी, किंतु अकाली फूला सिंघ के दल की दृढ़ता, सीधा मुकाबला करने की हिम्मत का कोई सानी नहीं था। वे एक निडर एवं बहादुर योद्धा थे।

कश्मीर की विजय के बाद अकाली फूला सिंघ सरदार हरी सिंघ नलवा के साथ सूबा सरहद्द की ओर चल पड़े और उस तरफ़ के अन्यायी व क्रूर, ज़ालिम हाकिमों को अच्छा सबक सिखाया। मोहम्मद आज़िम खान बारकज़ई, काबुल का हाकिम था। उसने सन् १८२३ ई. में बहुत-सी सेना इकट्ठी की तथा सूबा सरहद्द पर हल्ला बोल दिया। १२ फरवरी को उसने पेशावर पर कब्ज़ा कर लिया और खालसा राज्य के विरुद्ध जेहाद छेड़ दिया। महाराजा रणजीत सिंघ ने उसे टक्कर देने के लिए एक दिन पहले दो हज़ार घुड़सवार सैनिक कुंवर शेर सिंघ के नेतृत्व में भेजे और फिर दूसरे दिन अकाली फूला सिंघ, सरदार देसा सिंघ मजीठिया, सरदार फ़तिह सिंघ आहलूवालिया आदि सहित बहुत-सी सेना लेकर स्वयं चल पड़े।

मोहम्मद आज़िम खान बारकज़ई ने नौशहरा के रण-क्षेत्र में लश्कर ला खड़ा किया। उस लश्कर पर सरदार शेर सिंघ व सरदार हरी सिंघ नलवा ने हमला कर दिया। दुश्मनों ने अटक दरिया का पुल तोड़ दिया। महाराजा रणजीत सिंघ एवं अकाली फूला सिंघ ने उफ़नते दरिया की परवाह न की और दरिया पार कर युद्ध के मैदान में पहुंच गए। दुश्मन सेना छोटी-सी झड़प के बाद ही भाग खड़ी हुई। सिक्खों ने खैराबाद व जहांगीरो के दुर्ग पर कब्ज़ा जमा लिया। ख़ालसा राज्य का विस्तार होता चला गया।

जासूसों द्वारा सूचनाएं दी गईं कि आज़िम खान के पास और ज्यादा लश्कर पहुंच रहा है तथा दुश्मन बड़े स्तर पर युद्ध की तैयारी कर रहा है। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने सेनापतियों (जरनैलों) की बैठक आयोजित की और निर्णय लिया गया कि पहले ही आक्रमण कर दिया जाए। १४ मार्च, १८२३ ई. को अकाली फूला सिंघ के सामने गुरमता पारित हुआ और अरदास की गई।

समाचार मिला कि शत्रु का बड़ा तोपखाना भी आ गया है, इसलिए योज़ना में बदलाव कर अपना तोपखाना पहुंचाने की प्रतीक्षा कर ली जाए, किंतु दृढ़ निश्चयी तथा अटल स्वभाव के अकाली फूला सिंघ ने कहा कि वे निर्णय लेकर अरदास कर चुके हैं, इसलिए अब रुका नहीं जा सकता और आक्रमण भी तुरंत किया जाएगा।

खालसा फ़ौज उनका कहना मानकर उनके पीछे चल पड़ी। इतिहास साक्षी है कि नौशहरा के मैदाने-जंग में घमासान युद्ध हुआ। इतना बड़ा व भयानक युद्ध संपूर्ण राज़्य-काल में कभी नहीं हुआ था। इस युद्ध में एक हाथी पर सवार होकर लड़ते हुए अकाली फूला सिंघ शत्रु की गोलियों का शिकार होकर शहीद हो गए और अपनी जान खालसा पंथ की आन, बान, शान के लिए, कौम की रक्षा के लिए कुर्बान कर गए। इतिहास के पन्नों पर उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो गया।

सिक्ख विद्वान व चिंतक बाबा प्रेम सिंघ होती ने अकाली फूला सिंघ के बारे में यूं बयान किया है, "अकाली फूला सिंघ की अद्वितीय वीरता व प्रभाव के आगे बड़े-बड़े ताजवरों (मुकुटधारियों) के मुकुट झुके। रहती दुनिया तक उनके नाम का डंका बजता रहेगा। उनकी शहादत को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।"

विकिपीडिया में उनके बारे में दर्ज है कि "वे एक अकाली निहंग सिक्ख नेता थे। वे १९वीं शती के शुरूआत में खालसा शहीदां मिसल के एक सैनिक और बुड्ढा दल के प्रमुख थे। वे सिक्ख खालसा सेना के एक वरिष्ठ सेनापति और सेना के कमांडर भी थे। उन्होंने श्री अमृतसर साहिब में सिक्ख मिसलों को एकजुट करने में भूमिका निभाई। वे अंग्रेजों से नहीं डरते थे। अंग्रेज़ों ने कई बार उनकी गिरफ्तारी का आदेश दिया, मगर वे कभी सफ़ल नहीं हुए। उन्होंने महाराजा रणजीत सिंघ के सलाहकार के रूप में सिक्ख साम्राज्य के लिए सेवा की। वे नौशहरा में हुए युद्ध में १४ मार्च, १८२३ ई. को शहीद हो गए वे कई प्रसिद्ध युद्धों में सेनापति रहे। उनका इतना ख़ौफ था कि अंग्रेज़ उनसे थर-थर कांपते थे। वे एक विनम्र, अद्वितीय नेता और उच्च चरित्र वाले प्रतिष्ठित योद्धा थे।"

अकाली फूला सिंघ के महान् एवं विराट व्यक्तित्व और परोपकारी जीवन के बारे में जितना भी कहा या लिखा जाए, वो कम है। ऐसे सच्चे व निर्भीक नेता की आज भी सिक्ख कौम को बेहद ज़रूरत है, ताकि समय-समय पर उनके जैसा मार्गदर्शक हमारा मार्गदर्शन करता रहे और सभी एकजुट रहना सीख जाएं।

सामग्री-स्त्रोत :

१. साडे शहीद (ज्ञानी भजन सिंघ)
२. साडा इतिहास (प्रि. सतिबीर सिंघ)
३. बाबा प्रेम सिंघ होती
४. विकिपीडिया।

होली कीनी संत सेव।।

–*डॉ. जगजीत सिंघ **

होली का त्योहार हिंदू धर्म का प्रमुख त्योहार है जो विशेष तौर पर भारत में लगभग १० दिन तक मनाया जाता है।'पुराण कथा' के अनुसार, हृण्यकश्यप की बहन होलिका, जिसे शिव जी का 'वर' प्राप्त था कि वह कभी भी आग में नहीं जलेगी, भक्त प्रहलाद को गोदी में लेकर आग में बैठ गई। भक्त प्रहलाद तो प्रभु की कृपा द्वारा बच गया, मगर ढुंडा (होलिका) जल कर राख की ढेरी हो गई। हिंदू लोग होली (होलिका) के दिनों में इसी ढुंडा की राख उड़ाया करते थे। (महान कोश, पृष्ठ ५६६) धीरे-धीरे राख की जगह रंगों ने ले ली। रंगों के साथ, राख व कीचड़ से लथपथ टोलियाँ दूसरों को इसके साथ रंगने और लथपथ करते हुए बोलती थीं— "होली है भई होली है!" यह प्रथा कई नये रूपों में अभी भी जारी है। वृन्दावन, जहाँ श्रीकृष्ण जी की गोपियों के साथ रास-लीला बहुत प्रसिद्ध है, में एक विशेष स्थान पर स्त्रियां होली खेलती हैं, रंग की पिचकारियाँ तथा अन्य कई प्रकार के छिड़काव लेकर एक चौराहे पर गुजरने वाले पुरुषों को घेर लेती हैं। कुछ पैसों का शगुन देकर उनका छुटकारा होता है, नहीं तो उनको पीटा जाता है। हरेक राही को पैसे देकर जान छुड़ानी पड़ती है।

सिक्ख गुरु महाराज ने सभी त्योहारों की भावना और रूप-रेखा ही बदल दी। हरेक मर्यादा, रस्मो-रिवाज़ को प्रभु-प्रेम, नाम-सुमिरन, जीव-जंतुओं और कायनात के लाभ हेतु नया रूप प्रदान किया। होली का त्योहार प्राथमिक रूप से रंगों का त्योहार है। गुरु महाराज ने रंगों के साथ एक-दूसरे के शरीर और कपड़े रंगने की जगह महापुरुषों, भक्त-जनों की संगत करने व नाम-रंग में रंगे जाने के लिए जनसाधारण को प्रेरित किया। पाँचवे पातशाह का फरमान है :

आजु हमारै बने फाग।।
प्रभ संगी मिलि खेलन लाग।।
होली कीनी संत सेव॥

**२५, फेस-७, साहिबज़ादा अजीत सिंघ नगर, मोहाली–१६००५१, फोन : ९७७९८-१६९०९*

रंगु लागा अति लाल देव।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८०)

संत-सेवा का नाम-रंग पक्का रंग है, जो कभी नहीं उतरता। गुरबाणी में अनेक प्रमाण हैं, जिनमें प्रभु-प्रेम के पक्के रंग नाम-रंग में रंगे जाने की प्रेरणा है। बाहरी तौर पर रंगों के साथ एक-दूसरे को रंगने, लथपथ करने की होली खेलने का कोई लाभ नहीं, कोई प्राप्ति नहीं। केवल नाम का रंग ही असली और पक्का रंग है, जो प्रभु-प्रेम वाला है :

—कोरे रंगु कदे न चड़ै जे लोचै सभु कोई ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७३२)

—राम रगु कदे उतरि न जाइ।।
गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहब, पन्ना १९४)

गुरु जी का फरमान है कि अगर रंगों की होली खेलनी है, तो नाम के मजीठी रंग की होली खेलो और प्रभु-रंग में रंग जाओ :

काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे
पाईऐ नाउ मजीठ ॥
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२२)

मात्र बातों द्वारा या बाहरी खेलों द्वारा प्रभु-रंग नहीं चढ़ता, बल्कि गुरु के संग जुड़ने पर नाम-रंग चढ़ता है :

—हरि रंग कउ लोचै सभु कोई ॥
गुरमुखि रंगु चलूला होई ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७३२)

—कोरै रंगु कदे न चड़ै जे लोचै सभु कोई ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७३२)

गुरु की शरण में आने से, गुरमति धारण करने से जीव नाम के मजीठी रंग में रंगा जाता है :

गुरमती मनु इकतु घरि आइआ
सचै रंगि रंगावणिआ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १११)

गुरमति के अनुसार हरि-नाम ही असली पक्का मजीठी रंग है। प्रभु-कृपा द्वारा इसकी प्राप्ति होती है। हरि-नाम के रंग में रंगा हुआ जीवन ही सफल जीवन है :

हरि नामा हरि रंङु है हरि रंङु मजीठै रंङु ॥
गुरि तुठै हरि रंगु चाड़िआ
फिरि बहुड़ि न होवी भंङु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७३१)

गुरु साहिबान ने होली के कच्चे रंगों की जगह प्रेम, नाम-सुमिरन के पक्के मजीठी रंग में मन को रंगने की प्रेरणा की है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर होली की बाहरी रूप-रेखा को वीर-रस रूप

प्रदान कर इसे 'होला-महल्ला' नाम दिया जो कि मीरी-पीरी, संत-सिपाही, देग-तेग़ की परंपरा के अनुसार एक आलौकिक नया वीर-रसी खेल है। 'होला' अर्थात् हमला और 'महल्ला' अर्थात् हमले का स्थान। गुरु जी ने ख़ालसा को शस्त्र-विद्या और युद्ध-विद्या में निपुण करने के लिए होला-महल्ला की रीति चलाई। गुरु जी ने शस्त्रधारी सिंघों के दो जत्थे अथवा दल बना दिए और इनका एक-एक प्रधान अथवा जत्थेदार नियुक्त किया। एक ठिकाने से जत्थेदार ने अपनी फ़ौज (शस्त्रधारी सिंघ) लेकर दूसरे स्थान पर कब्ज़ा करने के लिए हमला करना होता था। दूसरे दल ने अपने बचाव के लिए हमलावर जत्थे को रोकना और वापस भगाना होता था। कलगीधर पातशाह खुद इस कृत्रिम जंग के करतब देखते और दोनों दलों को उत्तम जंगी-विद्या प्रदान करते। जो दल कामयाब होता, उसे दीवान में सिरोपाउ बख्शिश करते और दूसरे दल की भी हौसला-अफ़ज़ाई करते। किला हौलगढ़ श्री अनंदपुर साहिब वो स्थान है जहाँ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दीवान सजा कर संवत् १७५७, चेत्र सुदी १ को होला-महल्ला खेलने की रीति चलाई थी। उन्होंने गुरसिक्खों को अमृत की दाति प्रदान कर उनमें मीरी गुण भरने के लिए श्री अनंदपुर साहिब में किले भी बनाए।

श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला सिक्ख जगत का विशेष वीर-रसी त्योहार बन गया है। इस त्योहार पर लाखों की संख्या में देश के कोने-कोने से और परदेसों से सिक्ख संगत दर्शन करने व नगर कीर्तन में शामिल होने आती है। गुरु महाराज की लाडली फौज निहंग सिंघों के अनेक जत्थे वीर-रसी करतबों का प्रदर्शन करते हैं, जिसमें विशेष तौर पर गतका पार्टियों के आपसी मुकाबले, सजे हुए घोड़ों व ऊँटों की दौड़ और करतब, निहंग सिंघों के शौर्य-प्रदर्शन तथा अन्य कई प्रकार के जंगी करतब विशेष तौर पर देखने लायक होते हैं। श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला निस्संदेह सिक्ख कौम के विशेष शौर्य, मीरी-पीरी के प्रदर्शन का त्योहार कहा जा सकता है।

एक तजबीज़

ऐसे मनाएं होला-महल्ला !

*–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन**

होला-महल्ला की पृष्ठभूमि : प्रसिद्ध विद्वान भाई काहन सिंघ नाभा के अनुसार, "होला-महल्ला, हमला और हमले का स्थान है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसे को शस्त्र-विद्या और युद्ध-विद्या में निपुण करने के लिए, यह प्रथा आरंभ की थी कि दो दल बना कर, प्रमुख सिक्खों के नेतृत्व में किसी एक विशेष स्थान पर कब्ज़ा करना। कलगीधर पातशाह स्वयं इस मसनूई (बनावटी) युद्ध का कौशल देखते थे और दोनों दलों को शुभ शिक्षा देते थे। जो दल कामयाब होता था, उसे दरबार में सिरोपा बख़्शिश किया करते थे।"

होला-महल्ला के सम्बन्ध में कवि निहाल सिंघ की बहुत ख़ूबसूरत पंक्तियां हैं :

बरछा ढाल कटारा तेगा कड़छा देगा गोला है।
छका प्रसाद सजा दसतारा अरु कारदोना टोला है।
सुभट सुचाला अरु लख बाहां
कलगा सिंघ सुचोला है।
अपर मुछहिरा दाढ़ा जैसे, तैसे बोला होला है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब स्थित होलगढ़ नामक किले में दरबार लगाकर, चैत वदी १, संवत् १७५७ को होला-महल्ला खेलने की प्रथा आरंभ की थी।

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर सभी गुरु साहिबान ने, समय-समय पर हमें स्वस्थ शरीर और कसरत आदि के बारे में सचेत किया है। श्री गुरु अंगद देव जी खडूर साहिब (पंजाब) में 'मल्ल अखाड़ा' लगाया करते थे। इन मल्ल अखाड़ा में कसरत तथा कुश्तियां करवाई जाती थीं। सिक्खों के स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए तथा उनकी शारीरिक सुदृढ़ता के लिए, सभी सिक्खों को इन मल्ल अखाड़ों में कसरत व कुश्तियां करने की प्रेरणा की जाती थी। कुश्तियों का अभ्यास करवा कर, श्री गुरु अंगद देव जी कुश्तियों की प्रतियोगिताएं करवाते थे और फिर इन कुश्तियों में अच्छा प्रदर्शन करने वाले सिक्खों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया करते थे। इसी तरह से बाकी गुरु साहिबान ने भी सिक्खों को शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक सुदृढ़ता के महत्व को दर्शाया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रखने के साथ-साथ सिक्खों को शस्त्र धारण करने की भी प्रेरणा दी।

मूलत: होला-महल्ला, शस्त्र-विद्या, युद्ध-

* *७६. फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुगरी, लुधियाना– १४१०१३, फोन: ९७७९१-२४५००*

कौशल, स्वाभिमान व चढ़दी कला का प्रतीक, एक विलक्षण पर्व है। तत्कालीन नृशंस व अत्याचारी शासकों के अत्याचारों से प्रताड़ित, समाज के दबे-कुचले वर्ग में होला-महल्ला जैसे पर्व के कारण नई ऊर्जा का संचार हुआ। जो लोग पहले दबे-कुचले हुए थे, वे होला-महल्ला खेलने से युद्ध-कला में निपुण होकर नृशंस शासकों से लोहा लेने लगे थे।

होला-महल्ला क्यों मनाना चाहिए ? पंजाब व देश-विदेश के अनेक भागों में होला-महल्ला का पर्व, उत्साह व श्रद्धा सहित मनाया जाता है। हमें भी अपने-अपने क्षेत्रों में होला-महल्ला का पर्व मनाना चाहिए ताकि हम अपनी गौरवमयी विरासत व अपनी प्रथाओं के साथ जुड़े रह सकें। इसके अलावा होला-महल्ला मनाने से, हमारे अंदर भी नई ऊर्जा का संचार होता है। होला-महल्ला मनाने से, हर उम्र के व्यक्ति को अपना शरीर स्वस्थ रखने की, कसरत करने और विभिन्न खेल खेलने की प्रेरणा मिलती है। इसके साथ-साथ होला-महल्ला के दौरान, हम गतका (युद्ध-कला के प्रदर्शन) द्वारा, शस्त्र-विद्या व युद्ध-कौशल का प्रदर्शन एवं अभ्यास कर सकते हैं।

होला-महल्ला कैसे मनाना चाहिए ? अपने-अपने क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के खेलों तथा शस्त्र-विद्या व युद्ध-कौशल के प्रदर्शन का आयोजन करके, होला-महल्ला मनाया जा सकता है।

होला-महल्ला कौन मना सकता है? क्या हम भी होला-महल्ला मना सकते हैं? क्या होला-महल्ला का पर्व किसी विशेष वर्ग के लोग ही मना सकते हैं?

इस तरह के बहुत-से प्रश्न हम सबके मन में उठते रहते हैं। इन सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि कोई भी व्यक्ति जो होला-महल्ला के संकल्प को जानता/ समझता है या जानना/ समझना चाहता है या फिर होला-महल्ला के संकल्प को स्वीकार करके, होला-महल्ला मनाना चाहता है, वह इस पर्व को मना सकता है। होला-महल्ला मनाने के लिए, उम्र की कोई पाबन्दी नहीं है। हर उम्र का व्यक्ति (बच्चा, जवान व बुजुर्ग) होला-महल्ला मना सकता है। फिर, स्त्री-पुरुष (लड़के-लड़कियां) सभी होला-महल्ला के पर्व में भाग ले सकते हैं।

होला-महल्ला कब मनाया जाता है ? प्राय: होला-महल्ला होली के अगले दिन मनाया जाता है। प्रयत्न करना चाहिए कि परंपरागत ढंग से होली मनाने के ढंग से परहेज किया जाए और 'होली' को 'होला-महल्ला' के रूप में मनाना चाहिए।

होला-महल्ला वाले दिन कौन-कौन सी खेल-प्रतियोगिताएं आयोजित की जा सकती हैं ?

- गतका
- कम दूरी की दौड़
- रस्साकशी
- लम्बी छलांग
- (राग आधारित)गुरबाणी-कीर्तन प्रतियोगिता

- भाला फेंकना
- कबड्डी
- घुड़सवारी
- मल्ल अखाड़ा (कुश्ती) . . . आदि।

इनके अलावा शारीरिक कसरत के लिए, अन्य उपयुक्त खेलों को भी सम्मिलित किया जा सकता है। जिस भी खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना हो उससे सम्बंधित सामान एकत्र कर लेना चाहिए। समय-सारिणी का निर्धारण भी कर लेना चाहिए।

हम अपने-अपने क्षेत्रों में, होला-महल्ला का पर्व कैसे मना सकते हैं ? हम अपने-अपने क्षेत्रों में संगत रूप में एकत्र होकर या किसी सभा-सोसायटी के संग मिलकर होला-महल्ला मना सकते हैं। होला-महल्ला को उच्च स्तर पर सफलतापूर्वक मनाने के लिए सभी का सहयोग आवश्यक रहता है।

होला-महल्ला मनाने के लिए आरम्भिक कार्य क्या-क्या हैं ? होला-महल्ला मनाने के लिए सबसे पहला और ज़रूरी कार्य है— होला-महल्ला के लिए स्थान निर्धारित करना तथा उस स्थान पर होला-महल्ला पर्व मनाने के लिए (यदि आवश्यक हो) सम्बन्धित विभाग से आवश्यक स्वीकृति लेना। दूसरा जरूरी कार्य है— इस पर्व के लिए सोशल मीडिया व इश्तिहारों (विज्ञापनों) आदि की सहायता से होला-महल्ला पर्व का प्रचार व प्रसार करना। तीसरा आवश्यक कार्य है— निर्धारित स्थान की तैयारी करना तथा अलग-अलग खेल-प्रतियोगिताओं के लिए, अलग-अलग स्थानों की निशानदेही करना। तथा उन प्रतियोगिचाओं से सम्बंधित सामान-उपकरण आदि एकत्र करना।

होला-महल्ला की आरंभता कैसे की जानी चाहिए ? खेलों के लिए निर्धारित मैदान में मूल-मंत्र व गुरु-मंत्र के पांच-पांच पाठ करके तथा अरदास करके, होला-महल्ला की आरंभता करनी चाहिए।

होला-महल्ला में भाग लेने वाली सभी संगत की रजिस्ट्रेशन की जाए। सभी संगत रजिस्ट्रेशन के समय दिए जाने वाले बैज को लगा कर रखे, ताकि पता लग सके कि उन्होंने रजिस्ट्रेशन करवा ली है।

प्रबंधकों के लिए अलग तरह के बैज बनवाने चाहिए। प्रबंधकों के लिए यह अनिवार्य हो कि वे पूरा समय कमरकस्सा (कमरबंद) बांध कर रखें, ताकि पता चल सके कि किसी जानकारी या सहायता के लिए इन प्रबंधकों से संपर्क किया जाना है।

हुड़दंग मचाने वाले किसी भी बच्चे या बड़े को होला-महल्ला स्थान पर आने की अनुमति नहीं होनी चाहिए।

प्रोफेशनल खिलाड़ियों की बजाय आम संगत को खेल खेलने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

प्रतिभागियों के निम्नानुसार अलग-अलग ग्रुप

बनाए जा सकते हैं :—

बाल दल (३ से १२ वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए)

युवा दल (१२ से २८ वर्ष तक की आयु के नौजवानों के लिए)

व्यस्क दल (२८ से ५० वर्ष तक की आयु के व्यस्कों के लिए)

बुजुर्ग दल (५० से ज्यादा उम्र के बुजुर्गों के लिए)

इसी तरह से महिला प्रतिभागियों के लिए भी अलग-अलग ग्रुप बनाए जा सकते हैं।

सभी खेल इकट्ठे शुरू करने अनिवार्य नहीं हैं, क्योंकि कुछ प्रतिभागी एक से अधिक खेलों में भाग लेना चाहेंगे। इसी तरह कुछ प्रबंधकों को एक से अधिक खेल-प्रतियोगिताओं का प्रबन्ध करना पड़ सकता है, इसलिए सुविधानुसार, योजनाबद्ध तरीके से खेलों का समय आगे-पीछे किया जा सकता है।

कोशिश करनी चाहिए कि संगत रूप में उपस्थित सभी बच्चे, नौजवान व बुजुर्ग होला-महल्ला से सम्बन्धित आयोजित खेल-प्रतियोगिताओं में भाग लें। यह भी अनिवार्य न हो कि सभी खेल-प्रतियोगिताओं में भाग लेना आवश्यक है। सुविधानुसार, खेल-प्रतियोगिताओं की गिनती घटाई या बढ़ाई जा सकती है।

विशेष :

—होला-महल्ला के दौरान, एक मंच अवश्य बनाया जाए, जहां से समय-समय पर, होला-महल्ला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा महानता के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाई जाए!

—छोटे बच्चों को उत्साहित किया जाए कि वे गुरु साहिबान, चार साहिबज़ादों, पांच प्यारों आदि के नाम तथा साखियां सुनाएं! इन बच्चों को पुस्तकें, पेन, पेंसिल, स्टेशनरी की अन्य वस्तुएं आदि पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया जाए!

—सभी प्रतिभागियों को उचित पुरस्कार, जैसे कि पुस्तकें, मेडल आदि देकर सम्मानित करना चाहिए।

—होला-महल्ला पर्व के दौरान,गतका (युद्ध-कला का प्रदर्शन) तथा खेल खेलने का मनोरथ केवल जीत-हार का फैसला करना या खेलों में जीत हासिल करना नहीं है बल्कि आम लोगों को शस्त्र-विद्या व युद्ध-कौशल का अभ्यास करवाना तथा उनमें खेल-भावना पैदा करना व खेल-भावना का संचार करना है।

—होला-महल्ला मनाए जाने वाले स्थान की स्वच्छता (होला-महल्ला मनाने से पहले व होला-महल्ला मनाने के बाद) का विशेष ध्यान रखा जाए !

इस प्रकार से हम होला-महल्ला की महत्ता को दर्शाते हुए, इस पर्व को मना कर बच्चों व बड़ों में नई ऊर्जा का संचार कर सकते हैं।

नानकशाही नववर्ष के शुभारंभ पर विशेष

माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे॥

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु नानक साहिब का सिक्ख उस एक परमात्मा में विश्वास रखता है जो सम्पूर्ण सृष्टि का रचयिता, पालक और सहायक है :

बेद पुराण कथे सुणे हारे मुनी अनेका॥
अठसठि तीरथ बहु घणा भ्रमि थाके भेखा॥
साचो साहिबु निरमलो मनि मानै एका॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १००८)

गुरसिक्ख उस परमात्मा में विश्वास रखता है जो मनुष्य के ज्ञान से परे है, धर्म-कर्म, वेश, हठ से भी परे है। वह सर्वसमर्थ है और एकमात्र निर्मल शक्ति है। श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि परमात्मा सृष्टि की रचना से भी पूर्व था और कितने ही युग उसने गुबार, अंधकार में ही व्यतीत कर दिये। उस अथाह शक्तियों के स्वामी ने अपने एक साधारण से संकेत द्वारा अपार सृष्टि रच दी। वह युगों का सृजनकर्ता है और अपनी इच्छानुसार युगों को चला रहा है :

जुग छतीह तिनै वरताए॥
जिउ तिसु भाणा तिवै चलाए॥
तिसहि सरीकु न दीसै कोई आपे अपर अपारा हे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०२६)

दिन, महीने, वर्ष नहीं, सारे युग, जिनकी गणना मनुष्य काल के संदर्भ में करता है, परमात्मा के बनाये हुए हैं। सभी युग उसके अधीन हैं और उसकी आज्ञा में ही घटित हुए है। इसमें किसी अन्य शक्ति का कोई योगदान नहीं है क्योंकि परमात्मा के तुल्य कोई है ही नहीं। परमात्मा की शक्ति ऐसी है कि उसने शून्य से ही सारी सृष्टि रच दी। काल भी उसने शून्य से ही रचा है :

सुंनहु राति दिनसु दुइ कीए॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०३७)

सरल शब्दों मे कहें तो परमात्मा कुछ नहीं को सब कुछ कर देने वाला है। उसकी शक्ति की कल्पना भी संभव नहीं है। वह उसे भी संभव करने वाला है जिसे मनुष्य असंभव मान लेता है। मनुष्य ने जीवन की अपनी गणनायें बना ली हैं। किन्तु, यह बड़ा भ्रम है। परमात्मा के लिए मनुष्य की गणनाओं का कोई अर्थ है। वह जो चाहता है वही करता है, सृष्टि में वैसा ही घटित होता है :

साहा गणहि न करहि बीचारु॥
साहे ऊपरि एकंकारु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९०४)

मानव-सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य

**ई– १७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९*

के ज्ञान का क्षेत्र व्यापक होता गया। मनुष्य की सबसे बड़ी उत्सुकता सृष्टि का रहस्य जान लेने की रही है। वह सृष्टि पर अपना हुक्म चलाने को भी आदि काल से ही लालायित रहा है। उसने सृष्टि का रूप भी विकृत करने में कोई संकोच नहीं किया है। मनुष्य ने निज स्वार्थ में पहाड़ काट दिये, नदियों का रुख मोड़ दिया, जंगल साफ कर दिये, रात के अंधकार को उजाले में बदल दिया, बादल बना लिये, कृत्रिम शीत और ऊष्मा भी तैयार कर ली है। अपना विधाता स्वयं बन जाने की उसे धुन लगी हुई है। यह धुन ही उसके दुखों का कारण बनती है, क्योंकि यह उसे परमात्मा से विमुख करती है। गुरु साहिबान का मार्ग मानवता को परमात्मा के साथ एक दास, सेवक की भांति जोड़ने और उसकी आज्ञा, इच्छा के अधीन रहने का मार्ग था, इसीलिये गुरु साहिबान ने किसी भी गणना, हठ, कर्मकांड, शुभ–अशुभ के भ्रम से दूर रह कर मात्र परमात्मा की कृपा में रहने के लिये प्रेरित किया और परमात्मा की कृपा प्राप्त करने का मार्ग भी दिखाया :

गणत गणीऐ सहसा दुखु जीऐ॥
गुर की सरणि पवै सुखु थीऐ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९०४)

गुरसिक्ख गणना, शुभ-अशुभ, मुहूर्त का मार्ग नहीं अपनाता, क्योंकि यह दुख उत्पन्न करता है। इसके विपरीत वह परमात्मा की शरण लेता है और सुख की अवस्था प्राप्त करता है। समाज में समय की गणना के भ्रम अति गहरे थे। दिन ही नहीं, पलों की गणना भी शुभ-अशुभ की दृष्टि से की जाती थी। मनुष्य धर्म-कर्म के लिये भी समय, मुहूर्त का विचार करता था, जैसे अमावस्या को विशेष पूजा, दान-स्नान आदि का विचार किया जाता था। श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि अमावस्या तो झूठ, असत्य व अन्याय है और वास्तविक चंद्रमा सत्य है, जो झूठ को दूर करने वाला है— "कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ॥" सर्वश्रेष्ठ सत्य है, चंद्रमा नहीं। चिंतित करने वाला असत्य है, अमावस्या नहीं। अमावस्या का अंधकार कितना ही घना हो, असत्य उससे अधिक स्याह होता है। अंधकार कैसा भी हो परमात्मा की महिमा का गायन प्रकाश बन सर्वत्र प्रकाशित कर देता है— *"कलि कीरति परगटु चानणु संसारि॥"* मनुष्य जिसे भी अशुभ मानता है, जिससे भयभीत होता है वह अंधकार है। परमात्मा कृपालु हो तो सारे अंधकार दूर हो जाते हैं— *"मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी॥"* परमात्मा जन्मों-जन्मों के अंधकार मिटाने वाला है। गुरसिक्ख ऐसे महान परमात्मा की शरण लेकर काल, मुहूर्त, गणना के सारे भ्रम से मुक्त हो जाता है। वह चिंतामुक्त हो जाता है। श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा है कि परमात्मा की कृपा समय को अनुकूल करने वाली है :

माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६)

गुरु साहिबान भारतीय भू-भाग में बसने वाले मानव समाज की मानसिकता और स्थापित विश्वासों को भली-भांति जानते थे। मानव समाज द्वारा पाले गए भ्रम आदि आत्मिक विकास और परमात्मा के संग मेल के मार्ग में बाधक थे। वर्ष आरंभ होने से पूर्व ही गणनायें और भविष्यवाणियां होने लगती थीं। श्री गुरु नानक साहिब ने इस भ्रम से मुक्त करने के लिये वर्ष के सभी बारह महीनों की व्याख्या वाली बाणी उच्चारण की जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में तुखारी राग के अधीन 'बारह माहा' शीर्षक के अंतर्गत पन्ना ११०७ से पन्ना १११० तक अंकित है। श्री गुरु अरजन देव जी ने भी 'बारह माहा' शीर्षकाधीन मांझ राग में बाणी उच्चारण की है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना १३३ से पन्ना १३६ तक अंकित है। इस बाणी का सार श्री गुरु अरजन साहिब ने उपरोक्त एक पंक्ति में समाहित किया है कि उस मनुष्य के सभी महीने, सभी दिन, सभी पल शुभ फल देने वाले हो जाते हैं जिस पर परमात्मा की कृपा होती है। गुरु साहिब ने प्रेरित किया है कि मनुष्य का हित परमात्मा की कृपा प्राप्त करने में है। वह इसके लिये ही यत्न करे, किसी अन्य भ्रम में न पड़े। गुरु साहिब जानते थे कि मनुष्य को प्राप्त यह जीवन अत्यंत दुर्लभ अवसर की तरह है। व्यर्थ के भ्रम, आशंकाओं में यह अवसर व्यर्थ न चला जाये, इसलिये गुरु साहिब ने पूर्ण एकाग्र हो परमात्मा की भक्ति के लिये प्रेरित किया। श्री गुरु अरजन साहिब ने इसके लिये अत्यंत सशक्त तर्क दिया :

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३३)

मनुष्य अपनी बुद्धि और बल का प्रयोग करते हुए धरती के चारों कोनों, आठों दिशाओं में, ऊपर-नीचे अर्थात् कहीं भी खोज ले, कोई भी प्रयास कर ले, कैसा भी विधि-विधान, युक्ति कर ले, उसे निराशा ही मिलती है। उसके दुख, संताप बने रहते हैं। अपने ऐसे आचरण के कारण वह परमात्मा से दूर ही रहता है। अंत में परमात्मा की शरण ही बचती है जहां उसके दुखों का अंत हो सकता है। यदि चारों ओर से थके हारे मनुष्य को यह समझ आ जाये तो वह परमात्मा से कृपा की प्रार्थना करे। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा की कृपा मनुष्य के जीवन को वैसे ही सार्थक बनाती है जैसे दूध किसी गाय को स्वीकार्यता प्रदान करता है। जिस गाय में दूध नहीं, उस गाय को कहीं भी ठौर नहीं। परमात्मा की कृपा दूध के समान ठौर देने वाली है। गुरु साहिब ने दूसरा उदाहरण खेत की फसल का दिया है, जो जल के बिना सूख जाती है। ऐसी फसल का कोई मूल्य नहीं मिलता। परमात्मा की कृपा जल की तरह है

जो मनुष्य के जीवन को गुणवान बनाती है, ताकि उसके दुख दूर हो सकें। गुरु साहिब ने आगे समझाते हुए कहा है कि परमात्मा की कृपा का मनुष्य के जीवन में वह स्थान है जो एक स्त्री के जीवन में उसके पति का होता है। पति का होना पत्नी को निश्चिंत करता है। परमात्मा की कृपा मनुष्य को आश्वस्त करती है। मनुष्य के पास जो भी है वह नाशवान है। परमात्मा की कृपा नहीं तो कितने भी संबंधी, मित्र आदि हों, सहायक सिद्ध नहीं होते। जैसे मात्र पति ही अंतत: पत्नी का हित करता है वैसा ही परमात्मा है। श्री गुरु अरजन साहिब ने दूध न देने वाली गाय को भ्रम, बिना जल की खेती को कर्मकांड, पति से बिछड़ी पत्नी को अधर्म, सांसारिक पदार्थों को असत्य और सांसारिक संबन्धों को मिथ्या विश्वास के प्रतीक बना कर उनके जाल से बाहर निकालने का उपकार किया। गुरु साहिब ने अपने विचार का विस्तार करते हुए वर्ष के सभी महीनों की चर्चा की।

'बारह माहा' नामक अपनी बाणी में श्री गुरु अरजन साहिब ने मनुष्य को परमात्मा के संग जोड़ने के लिये प्रत्येक माह के गुणों-दोषों को आधार बनाया। इससे बाणी जहां रोचक हुई वहीं गुरु साहिब की प्रेरणा सीधे मन में उतरती गई। हिन्दू वर्ष की तरह सिक्ख वर्ष भी 'चैत्र' माह से आरंभ होता है जिसे चेत कहा गया है। अंतिम माह फाल्गुन है, जिसे 'फग्गण' कहा जाता है। (वर्तमान काल में) चेत माह में अंग्रेजी महीने मार्च का द्वितीय पखवाड़ा और अप्रैल महीने का प्रथम पखवाड़ा आता है । इसी तरह क्रम आगे बढ़ता जाता है। अंतिम महीने फग्गण (फाल्गुन) में फरवरी का पूर्वार्ध और मार्च का उत्तरार्ध शामिल होता है। क्योंकि गुरबाणी समय के शुभ-अशुभ का कोई विचार नहीं करती, अत: महीनों के विचार का उद्देश्य मात्र सिक्ख को इससे संबन्धित समस्त भ्रम, दुविधाओं से मुक्त कर सारे समय का उपयोग मन को परमात्मा के साथ जोड़ना और सदैव परमात्मा में रमे रहना है। समय कैसा भी हो 'बारह माहा' का विचार सिक्ख को उसका उपयोग परमात्मा की भक्ति में करने का सामर्थ्य और भावना प्रदान करना है। समय सदैव एक समान नहीं रहता। इसका अनुभव हमें वर्ष के बारह महीने कराते हैं। सिक्ख वर्ष का आरंभ बसंत ऋतु से हुआ था, जिसका प्रभाव चैत्र और वैशाख महीने में रहता है। यह मधुर और सरस समय माना जाता है। समय बदलता है। सरसता अब ताप में बदल जाती है। ज्येष्ठ और आषाढ़ माह इसके प्रभाव में रहते हैं। ताप भी सदैव नहीं रहता। अब वर्षा ऋतु अपना प्रभाव दिखाती है और सावन, भादों के महीने जल भरे होते हैं। इसके पश्चात शरद की शीत ताप दूर कर शीतलता प्रदान करती है। तत्पश्चात् शरद का उग्र रूप ठिठुरन और बर्फीले अनुभव देने वाला होता है।

श्री गुरु अरजन साहिब ने समय के भिन्न-भिन्न प्रभावों और परिवर्तनशीलता को जीवन के सच के साथ से जोड़ कर 'बारह माहा' की रचना की। इस पावन बाणी का पहला संदेश है कि समय सदैव एक-सा नहीं रहता। सुख है तो सदैव सुख नहीं रहेगा। दुख है तो सदैव दुख नहीं रहेगा। मनुष्य परिवर्तन के लिए सदैव तैयार रहे। गुरबाणी ने कहा कि मनुष्य न सुख सहेजने की चिंता करे, न दुख में निराशा का भाव उत्पन्न कर हताश हो जाये। समय कैसा भी हो, उसका प्रभाव मनुष्य के मूल जीवन-उद्देश्य को प्रभावित और विचलित न करे। इसका मार्ग श्री गुरु अरजन साहिब ने 'बारह माहा' नामक बाणी में क्रमानुसार दिखाया है।

अपने जीवन में आनंद सभी चाहते हैं। सांसारिक कारणों से प्राप्त आनंद में ही मनुष्य लिप्त हो जाता है। गुरु साहिब ने इसे अस्थायी बताते हुए सच्चे आनंद के दर्शन कराये हैं :

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३३)

सच्चा आनंद क्या है, इसे जानना आवश्यक है। गुरसिक्ख जानता है कि परमात्मा की भक्ति में ही सच्चा और परम आनंद है। जिसे परमात्मा की भक्ति का रस आ गया उसका ही संसार में आना सफल है— *"जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा॥"* जीवन में सच्चे सुख की पहचान नहीं है तो सारे सुख-साधन होते हुए भी दुख ही व्याप्त रहता है— *"सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा॥"* वैशाख के महीने को विशेष रूप से सरसता का समय माना गया है। अपने जीवन में भी कभी ऐसे कारण बनते हैं जब मन में कोमल भावनायें जन्म लेती हैं और मनुष्य मुग्ध हो जाता है। माया विभिन्न रूपों में मन को आकर्षित करती है। श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा कि ऐसे मोह और उनसे उत्पन्न होने वाली कोमल भावनायें मिथ्या हैं :

पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३३)

इनके भ्रम-जाल में उलझ कर जीवन निरर्थक चला जाता है, कुछ भी प्राप्त नहीं होता। वैशाख निश्चित ही परमात्मा का प्रदान किया सुहावना समय है, किन्तु यह तभी अपना प्रभाव छोड़ता है जब मन परमात्मा में रमा होता है :

वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४)

जीवन में आनंद के कई कारण बन सकते हैं, किन्तु वे स्थायी नहीं होते। प्रायः मनुष्य उनमें मुग्ध होकर परमात्मा को विस्मृत कर देता है। इससे सुख अंततः दुख में बदल जाता है। समय कोई भी हो, मनुष्य सदैव परमात्मा का ध्यान करे और उसकी शरण में रहे।

जैसे महीने बदलते हैं वैसे ही सुख को संताप में बदलते देर नहीं लगती। चैत्र और वैशाख आनंद दे रहे थे, अब ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने

ताप देकर विह्वल करने आ पहुंचे हैं। इस अवधि का ताप सहन करना कठिन हो जाता है। मनुष्य विवश-सा दिखता है और अधीर होने लगता है। गुरु साहिब ने कहा है कि यह सब परमात्मा के रंग हैं कि अभी तक समय सरस था, अब त्रास देने लगा है। किन्तु, जिसने परमात्मा का आसरा लिया है उसे कुछ भी विचलित नहीं कर सकता। परमात्मा ताप को भी शीतलता में बदल देता है, वह महीने का प्रभाव हो या जीवन की परिस्थितियां। ज्येष्ठ का ही महीना था, जब श्री गुरु अरजन साहिब को कई दिन तपती तवी पर बैठाया गया था। फिर भी उनका धैर्य बना रहा। न संकल्प टूटा, न मुख से आह निकली। क्योंकि, मन में स्थायी शीतलता देने वाला परमात्मा का नाम चल रहा था :

—हरि जेठु रंगीला तिसु धणी
जिस कै भागु मथंनि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४)

—आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै
जिसु मनि हरि चरण निवास॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४)

तपते हुए महीने प्रिय और सुहावने हो जाते हैं जब मन परमात्मा को अपना स्वामी मान लेता है और उसे अपने मन में बसा लेता है। यह विश्वास मन में दृढ़ हो जाये कि जीवन-सफलता के लिये परमात्मा के बिना कोई अन्य ठौर नहीं है— *"प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि॥"* गुरसिक्ख परमात्मा की शरण ही नहीं लेता, उस पर अपना विश्वास ही नहीं रखता, वह परमात्मा से प्रेम भी करता है और उसके रंग में रंग जाता है :

सावणि सरसी कामणी
चरन कमल सिउ पिआरु॥
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४)

उपरोक्त वचन में श्री गुरु अरजन साहिब द्वारा किया गया परमात्मा के प्रति गुरसिक्ख के पूर्ण समर्पण की अवस्था का वर्णन मिलता है। जैसे सावन के महीने में मन मोहक भावनाओं से भर उठता है, वैसे ही परमात्मा के प्रति समर्पण मन को सदा के लिये मुदित कर देने वाला है। सावन तो एक ही महीने का है, जिसके जाते ही मन की अवस्था बदल जाती है, किन्तु परमात्मा को समर्पित मन सदैव मुदित रहता है, सावन हो या न हो। सुहागिन स्त्री के लिये सावन का महीना विशेष आनंद प्रदान करने वाला होता है, किन्तु वास्तविक आनंद उसे है, जिसने परमात्मा को अपना पति मान लिया है— *"सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु॥"* वास्तविक सुहागिन वही है, सावन उसी के लिये आनंददायी है, जिसने परमात्मा से पति की भांति प्रेम किया है। सावन में प्रेम-गीत गाये जाते हैं । गुरसिक्ख सदैव परमात्मा-प्रेम के गीत गाता है, जिससे उसके सारे महीने सावन हो जाते हैं। ऐसे

गुरसिक्ख धन्य हैं।

मनुष्य को कभी भ्रम भी बहुत दुख देते हैं। गुरबाणी में संसार को ही भ्रम कहा गया है। मनुष्य जिसे देखता है उसे सत्य मान लेता है। वह वास्तव में कुछ और होता है जो विपरीत परिणामों का जनक होता है। जिसे सुख की आशा में स्वीकार किया जाता है वह दुखदायक निकलता है। श्री गुरु अरजन साहिब ने इसके लिए भादों महीने को प्रतीक बनाया है। इस महीने में आकाश पर छा गये घने बादल देख कर लगता है कि भारी वर्षा होने वाली है, किन्तु एक बूंद भी नहीं बरसती और बादल गुम हो जाते हैं, सारी आशायें आलोप हो जाती हैं। मनुष्य ने यदि झूठ, मिथ्या धारण किया है तो परिणाम भी वैसा ही प्राप्त होगा :

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४)

अपने कर्मों का ही फल भोगना पड़ता है। झूठ, भ्रम अर्थात् सांसारिकता और माया के भ्रम में रम कर व्यतीत किया गया जीवन व्यर्थ चला जाता है। अंतत: वह कुछ भी सहायी नहीं होता जिसके लिये पूरा जीवन लगा दिया जाता है। परमात्मा की शरण ही संसार के भ्रम से उबारने वाली है— *"नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु॥ से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु॥"*

आगे का समय शीत काल का है। ठंड धीरे-धीरे बढ़ती हुई अपने शिखर पर पहुंच जाती है। बाद में उसका प्रभाव भी मंद गति से ही कम होता है। मनुष्य के जीवन में समस्यायें भी ऐसी ही हैं। जो समस्यायें छोटी होती हैं, उचित निदान न होने के कारण विकट हो जाती हैं। उनके समाधान में भी समय लगता है। परमात्मा से विरत मनुष्य कैसे सुखी रह सकता है!

— *विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ॥*

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५)

— *परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग॥*

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५)

— *साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह॥*
तिन दुखु न कबहू उतरै
से जम कै वसि पड़ीआह।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५)

श्री गुरु अरजन देव जी गुरसिक्ख को बार-बार सचेत, सावधान करते हैं कि परमात्मा की कृपा के बिना समय का प्रभाव दुखदायक हो जाता है। दुखों से मुक्त होना असंभव होता है। समय विपरीत होने से पूर्व ही मन में परमात्मा-प्रेम की भावना जाग्रत हो जाये, परमात्मा की शरण प्राप्त करने की उमंग पैदा हो जाये— *"असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ॥"* परमात्मा-प्रेम का संकल्प मन में दृढ़ होना चाहिये तब समय अनुकूल होता है। परमात्मा का प्रेम तृप्त करने वाला है। वह विकारों

से मुक्त करने वाला है। सभी संशय, दुविधायें दूर हो जाती हैं। गुरु साहिब ने यह भी वचन किया है कि परमात्मा की भक्ति गुरसिक्ख को शोभा और सम्मान का पात्र बनाती है। परमात्मा की भक्ति आवागमन से भी मुक्त कर देती है :

मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५)

गुरसिक्ख का लक्ष्य मात्र दुखों से मुक्ति नहीं है, वास्तविक दुख चौरासी लाख योनियों में आवागमन से मुक्त होना है। गुरसिक्ख की भक्ति इससे मुक्त हो परमात्मा में सदा के लिये अभेद हो जाने की है। श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा है कि सिक्ख का जीवन सदैव एक निश्चित पथ पर चलता है। बहुत-से लोग किसी महीने विशेष, समय विशेष को धर्म-कर्म में लगाते हैं, ताकि पुण्य कमा सकें। धर्म-कर्म की भी अपनी-अपनी विधि थी। गुरु साहिब ने सरल विधि बताई :

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५)

श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा कि गुरसिक्ख के लिये साधसंगत ही सबसे बड़ा तीर्थ है। साधसंगत करना, संत-सेवा करना सबसे बड़ा तीर्थ-स्नान है। परमात्मा का नाम जपते हुए मन में दया, धर्म और सेवा की भावना दृढ़ होती है और मानवता के हित का संकल्प जन्म लेता है। ऐसे मनुष्य का दान, परोपकार किसी वर्ग विशेष के लिये नहीं, बिना किसी भेदभाव के पूरे समाज के लिये होता है। इससे जन्म-जन्मांतर के पाप मिट जाते हैं और सद्गति प्राप्त होती है। जीवन फाल्गुन जैसा सुहावना हो जाता है। दुख निकट भी नहीं आते— *"सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥"*

समय परमात्मा का सृजन है और परमात्मा के अधीन है। समय तब विपरीत है जब मन में परमात्मा का नाम, विश्वास नहीं है। परमात्मा की कृपा समय के दुख को सुख में बदलने वाली है। महीना, मौसम कोई भी हो, गुरसिक्ख अमृत वेले (बेला में) उठ कर स्नान करता है और परमात्मा का ध्यान करता है। यह परमात्मा की कृपा ही है कि उसकी इस मर्यादा में कभी कोई अवरोध नहीं उत्पन्न होता है। वर्ष का आरंभ एक ही संकल्प के साथ हो कि— "पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥" सदैव मन में एक ही विश्वास दृढ़ रहे— *"जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥"* सुख का यही मार्ग है।

सिक्ख रहितनामों में महिला-सम्मान

–डॉ. गुरतेज सिंघ ठीकरीवाला*

'रहितनामे (आचार नियमावली)' 'सिक्ख रहित मर्यादा' (आचार-संहिता) से सम्बन्धित अहम दस्तावेज़ हैं। सिक्ख पंथ द्वारा स्वीकृत 'सिक्ख रहित मर्यादा' में वर्णित रहितें व कुरहितें रहितनामों से ही उद्धृत हैं और इनकी शब्दावली[१] भी रहितनामों वाली ही है। साहित्य के पद्य तथा यद्य दोनों रूपों में प्राप्त रहितनामों में कुछ सिक्ख शब्दावली को पारिभाषित करने के यत्न भी मिलते हैं, जैसे 'तनखाहनामा भाई नंद लाल जी' में ख़ालसे को परिभाषित करते कुछ लक्षण अंकित हैं।[२] हस्तसात् लेख का विषय भाई नंद लाल जी, भाई प्रह्लाद सिंघ, भाई दया सिंघ, भाई चउपा सिंघ और भाई देसा सिंघ के रहितनामों में उल्लिखित महिला-सम्मान से सम्बन्धित रहित (आचरणावली) के बारे में चर्चा करना है। लेख का उद्देश्य सिक्ख रहितनामों में महिला-अस्तित्व और महिला-सम्मान के साथ जुड़े मुद्दों को उभारना और इनके सर्वथा हल के लिए रहितनामों के अनुदेशों की प्रासंगिकता का चित्रण है। विशेष बात यह भी है कि पुरुष-प्रधान समाज में भी संवेदनात्मक और भावुक प्रवृत्तियों के द्वारा पुरुषों के मानसिक झुकाव को अस्थिर करने की महिला-शक्ति की भी रहितनामों में से झलक प्राप्त होती है।

रहितनामा : परिभाषा : 'रहितनामा' उस लिखित या पुस्तक को कहा जाता है जिसमें सिक्ख धर्म की नियमावली के अनुसार एक सिक्ख-रहित की मर्यादा बताई गई हो। इस प्रसंग में श्री गुरु ग्रंथ साहिब, श्री दसम ग्रंथ साहिब, रचना भाई गुरदास जी— सिक्ख धर्म के प्रमुख रहितनामे हैं, परन्तु इनकी पदवी और महत्ता सिक्ख धार्मिक ग्रंथों के रूप में ही है और इनमें आत्मिक रहित की व्याख्या की गई है। सिक्ख ऐतिहासिक ग्रंथों में सिक्ख रहित की पुष्टि के कुछ अंश मिलने के कारण इन ग्रंथों को भी रहितनामों की श्रेणी में रखा गया है।[३]

सिक्ख धर्म में 'रहितनामे' पद का प्रचलन उन रचनाओं के शीर्षक के रूप में है, जिनमें विधिनिषेध[४] कर्मों का वर्णन है। सिक्ख संकेतावली में करणीय (धारण करने योग्य) कार्य को 'रहित' कहते हैं और अकरणीय (धारण न करने योग्य) कार्य को 'कुरहित' कहा जाता है।

सिक्ख धर्म में महिला-सम्मान : रहितनामों का

*प्रिंसिपल, मीरी-पीरी खालसा कॉलेज, भदौड़, जिला बरनाला (पंजाब)–१४८१०२, फोन : ९४६३८-६१३१६

आधार-स्रोत सिक्ख सिद्धांत/गुरबाणी है। सिक्ख धर्म की मानवीय जाति की समानता हेतु सिद्धांत-सृजन करना और इसके अमल के कार्यक्रम में महिला के दर्जे को ऊँचा करना आवश्यक भाग था। जात-पांत की विचारधारा ने महिलाओं को भी निम्न स्तरीय दर्जा दिया हुआ था। कई कारण से तो उन्हें 'शूद्र' के समान समझा जाता था। श्री गुरु नानक साहिब जी ने भारतीय विचारधारा के अंतर्गत महिला वर्ग से सम्बन्धित दंभी विचार-संकल्पों का खंडन करते हुए महिला के मान-सम्मान के लिए नारा बुलंद किया कि जिस महिला से उच्च कोटि की प्रतिभा का जन्म होता है उसे क्यों बदनाम किया जाये ?[५] श्री गुरु अमरदास जी ने पर्दा-प्रथा और सती-प्रथा को ख़त्म कर महिला-सम्मान में और बढ़ोत्तरी की।

रहितनामे और महिला-सम्मान : गुरु साहिबान द्वारा महिला-सम्मान से सम्बन्धित निर्देशित एवं निर्धारित कार्यक्रम से पूर्व सिक्ख साहित्य व सिक्ख इतिहास ने बतौर मार्गदर्शक नेतृत्व प्राप्त किया और निस्संकोच महिला-सम्मान के लिए यत्न जारी रखे। ऐसे साहित्य में से रहितनामों ने महिला-सम्मान हेतु ही नहीं, बल्कि महिला-अस्तित्व को बचाये रखने के लिए भी सिक्खों को बेबाक ताड़ना की। वर्तमान समय में महिला-अस्तित्व के लिए चुनौती भरपूर घातक रुझान मादा-भ्रूण-हत्या का अविकसित रूप 'कन्या-वध'[६] प्रचलित था और विगत समय में महिला वर्ग का वजूद खत्म करने के ख़ात्मे के लिए एक बड़ा अप्राकृतिक कुकर्म था। इसलिए, रहितनामों में 'कन्या-वध' से सम्बन्धित सख़्त ताड़ना, महिला-सम्मान के अमल में उठाए गए पुख़्ता कदम थे। भाई चउपा सिंघ (छिब्बर) के रहितनामे में तीन कुरहितों को अक्षम्य दरसाया गया है। उनमें से एक कुरहित कन्या-वध है :

"गुरू के सिक्ख मुसदी— जो सरकार तुरकां दी विच होवन इक कन्या हत, दूजा भदण, तीजा बिखिआ (तंमाकू) इह न करन, होर करन तां बखसाइ लैण।"[७]

रहितनामों में सिक्खों को 'कन्या-वधक' के साथ रोटी-बेटी का रिश्ता न रखने की हिदायत[८] और 'कन्या-वधक' को 'ख़ूनी तनखाहिया'[९] करार देना गुरमति विचारधारा में इस प्रकृति-विरोधी कर्म की स्पष्ट मनाही के संकेत हैं। महिला-सम्मान के लिए प्रेरणा व शिक्षा अन्य सिक्ख ग्रंथों में भी मिल जाती है और महिला-तिरस्कार या कन्या-वध को वर्जित किया गया है। महिला का तिरस्कार या कन्या-वध का कर्म करने के पश्चात् मिलने वाली सज़ा या तनख़ाह की व्यवस्था केवल रहितनामों में ही है। रहितनामों की इस अध्ययन-विधि से इनके द्वारा सैद्धांतिक या तार्किक पैंतरे की अपेक्षा सिक्ख रहित से सम्बंधित जीवन के व्यावहारिक दृष्टिकोण को अपनाना ज्ञात होता है, जो सिद्धांत तथा व्यवहार के मध्य अंतर को दूर करने का यत्न

है।'रहितनामे' सैद्धांतिक पाठ (Text) न होकर सरल भाषा-शैली में रहित मर्यादा का ब्यौरा हैं, महिला-सम्मान के अनुप्रयुक्त रूप के जामिन हैं।

रहितनामों में महिला-सम्मान की युक्ति की दूसरी अनुप्रयुक्त-दृष्टि विकारी पुरुषों को पराई महिला के साथ नाजायज संबंधों से की गई ताड़ना है। महिला को एक भोग-वस्तु मानने के विचारों का रहितनामों में स्पष्ट रूप से खंडन है। इस कराण रहितनामे निज-स्त्री (पत्नी) के अलावा पराई स्त्री, जिसके लिए 'तुर्कनी संग' और 'मुसली युद्ध'[१०] के संकेतों का प्रयोग भी किया गया है, के साथ शारीरिक संबंधों की आज्ञा नहीं देते तथा ऐसे अनैतिक कर्म के लिए तनख़ाह की व्यवस्था की गई है। भाई देसा सिंघ के रहितनामे में पराई स्त्री का त्याग एक रहितवंत (आचारणवान) सिंघ की परिभाषा का ज़रूरी लक्षण दरसाया गया है :

पर बेटी को बेटी जानै। पर स्त्री को मात बखानै।
अपनि स्त्री सो रति होई। रहतवंत सिंघ है सोई।[११]

भाई दया सिंघ और भाई देसा सिंघ के रहितनामों में अकरणीय पाँच कर्मों में एक कर्म परायी स्त्री के त्याग से सम्बन्धित है और निज स्त्री का त्याग न करने के बारे में भी ताड़ना है।[१२]

मानव-समानता के आदर्श में मानव के समान आर्थिक अधिकारों का सरोकार भी सम्मिलित है। महिला-सम्मान के समूचे यत्न उसकी आर्थिक आज़ादी के बिना और उसके किसी प्रकार के शोषण की भावना के होते हुए अधूरे थे। भारतीय समाज में महिला के प्रति प्रचलित घृणित वातावरण से जहाँ महिला वर्ग के वजूद पर प्रश्न-चिह्न था, वहाँ जागीरदारी रुचि के अंतर्गत पुरुष द्वारा महिला का आर्थिक शोषण करने के बरताव का रुझान था। रहितनामों में महिला के पैसे न खाने की सख़्त चेतावनी महिला के आर्थिक अधिकार की रक्षा हेतु और महिला-शोषण के विरुद्ध बुलंद आवाज़ है :

धी भैण का पैसा खाइ।
कहै गोबिंद सिंघ धके जम खाइ।[१३]

गृहस्थ जीवन के सूचक 'अनंद विवाह' के समय कन्या के लिए एक ज्ञानवान और सद्गुण-सम्पन्न धर्मी वर का चयन तथा विकारी पुरुष को मूलत: रद्द कर देने की दृढ़ करवाई गई रहित[१४] एक ख़ुशहाल परिवार और महिला के सामाजिक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है। महिला के आर्थिक शोषण के विरुद्ध ताड़ना करने वाले भाई चउपा सिंघ के रहितनामे की पुष्टि के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रमाण भी दर्ज किया गया है। उदाहरणतया—

"जो गुरू का सिक्ख होइ सो . . .
कन्या दे न पैसे खाए।[१५]

साख ग्रंथ साहिब दी :

"साई पुत्री जजमान दी
सा तेरी एत धान खाधै तेरा जनम गइआ।"

महिला-सम्मान के मार्ग में पेश बाधाओं में से

हकीकतन ज़्यादा घातक मुद्दा महिला की धार्मिक आज़ादी पर हमला था। पूर्व काल में भारतीय समाज में महिला के धार्मिक प्रकटीकरण और आस्था पर पाबंदी थी। इससे सम्बन्धित विभिन्न भारतीय परंपराओं की महिला की भूमिका को मूलत: रद्द करती स्थापित धारणाएं विचारणीय हैं। गुरु साहिबान ने ऐसी धारणाओं पर करारी चोट करते हुए महिला को धार्मिक आज़ादी ही प्रदान नहीं की, बल्कि धर्म-प्रचार के मिशन के लिए पुरुषों के समान महिलाओं को भी योग्य समझा। श्री गुरु अमरदास जी ने धर्म-प्रचार के लिए जो २२ मंजियां (प्रचार-केंद्र) स्थापित की थीं, उनमें से कुछ एक की प्रमुख महिलाएं थीं।[१६]

रहितनामों में एक सिक्ख के लिए अपनी पत्नी को लाज़िमी खंडे की पाहुल छकाने की, की गई हिदायत के पीछे प्राचीन समय से महिलाओं को गुरु-दीक्षा से वंचित रखने के भेदभाव का एहसास काम कर रहा था। गुरु साहिबान द्वारा महिला को गुरु-दीक्षा लेने के दिए गए अधिकार को व्यावहारिक रूप से लागू कराने हेतु रहितनामों ने महिलाओं को गुरु-दीक्षा न दिलाने वाले सिक्ख को तनखाहिया एलान किया है :

जो सिक्ख सिक्खणी नूं खंडे दी पाहुल न देवे,
सो तनखाहीआ।[१७]

आचार नियमावली हज़ूरी भाई चउपा सिंघ (छिब्बर) के रहितनामे में 'सिक्खणी हित रहित' शीर्षकाधीन सिक्ख महिला के प्रति अपने पति को सिक्खी का उपदेश करने की दरसाई गई रहित महिला-सम्मान के अमल की पराकाष्ठा कही जा सकती है, इसलिए सिक्ख महिला अपने पति को धर्म का उपदेश दृढ़ करवाने के लिए सर्वसमर्थ है :

भरतै नूं सिक्खी दा उपदेश करै।[१८]

रहितनामों में महिला-सम्मान से सम्बन्धित दरसाई गई कन्या-वध न करने, महिला को भोग-वस्तु न समझने, महिला-शोषण के विरुद्ध तथा महिला को सिक्खी उपदेश लेने व देने (धार्मिक स्वतंत्रता) की रहित स्त्रीवाद[१९] (Feminism) के संकल्प की भांति किसी पुरुष-विरोधी विचारों में से पैदा नहीं हुई। यह केवल धार्मिक विश्वास और धर्म के प्रति वचनबद्धता के रूहानी मंडल में पैदा हुआ धार्मिक ज़ब्त है, किसी अंतर्निहित जीवन की सूचक है। रहितनामे इस रहित को सिक्खी व्यवहार में से न भुलाने को आगाह करते हैं।

रहितनामों में महिला-सम्मान का मसला आज भी उतना ही सार्थक है। महिला वर्ग से सम्बन्धित सामाजिक रीति-रिवाज बद से बदतर हो गए हैं और रहितनामों की ताड़ना वयावहारिक दृष्टि से भुला दी गई है। महिला-सम्मान से सम्बन्धित रहित रूप में वर्णित उक्त निर्देशों को त्यावहारिक रूप प्रदान किया जाये, तो कन्या-भ्रूण-हत्या, महिला-शोषण जैसी

कुवृत्तियों को दूर कर महिला-सम्मान को बहाल रखा जा सकता है। रहितनामा-साहित्य की महिला अस्तित्व और सम्मान के मुद्दे पर भरपूर चर्चा उल्लेखनीय है। रहितनामे सिक्ख रहित मर्यादा का अभिन्न अंग हैं। लिंग-समानता सिक्ख धर्म-दर्शन का अहम विषय है और रहितनामा-साहित्य इस विषय का सरल प्रस्तुतीकरण करता है। सिक्खी में क्या करना प्रवान है या अप्रवान है, यह निर्देश रहितनामे प्रदान करते हैं। इसी प्रसंग में रहितनामे महिला-सम्मान बनाए रखने के लिए सिक्ख जिज्ञासुओं के अमल और भावनाओं को आगाह करते हैं तथा ऐसा न होने पर ताड़ना भरपूर मुहावरों में लोक-परलोक की सज़ा भी दरसाते हैं। धार्मिक साहित्य के पक्ष से भी रहितनामे अहम दस्तावेज़ हैं। महिला-सम्मान के साथ जुड़े मुद्दों के कारण इनकी सार्थकता मूल रूप जितनी ही कही जा सकती है। आज के महिलावाद के प्रसंग में महिलाओं के प्राकृतिक-सामाजिक-आत्मिक संतुलन को बनाए रखने के सामर्थ्य और संभावना के कारण रहितनामा-साहित्य अधिक गौरवमयी और प्रशंसा का पात्र है।

संदर्भ-सूची :

१. सिक्ख रहित मर्यादा, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २००८, पृष्ठ २०; "केस लड़के के जो होए सो उन्हां दा बुरा न मंगे।"

२. तनखाहनामा भाई नंद लाल जी, रहितनामे (संपा. प्यारा सिंघ पद्म), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २०००, पृष्ठ ५९.

खालसा सोइ जो निंदा तिआगै।
खालसा सोइ जो लड़ै होइ आगै।
खालसा सोइ पंच कउ मारै।
खालसा सोइ भरम कउ साड़ै।

३. महान कोश, भाषा विभाग, पंजाब, १९९९, पृष्ठ १०१५; रहितनामे (संपा. प्यारा सिंघ पद्म), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २०००, पृष्ठ ३९; सरब लोह ग्रंथ, श्री गुर शोभा, गुररतनमाल (सौ साखी), महिमा प्रकाश, गुरबिलास (भाई सुक्खा सिंघ व भाई कुइर सिंघ), श्री गुरू पंथ प्रकाश, गुरमति निर्णय सागर, पंथ प्रकाश, शहीद बिलास, गुर पद प्रेम प्रकाश, गुरप्रताप सूरज।

४. महान कोश, भाषा विभाग, पंजाब, १९९९, पृष्ठ १०१५; हिंदू मत में विधिनिषेध कहते हैं। विधि—करणीय और निषेध अकरणीय।

५. प्रो. पूरन सिंघ, गुर शब्द विसमाद बोध (अनु. किरपाल सिंघ कसेल), पंजाबी पब्लिकेशन पटियाला, २००३, पृष्ठ २२५-२२६

६. महान कोश, भाषा विभाग, पंजाब, १९९९, पृष्ठ ३४५; कन्या-वध (कुड़ीमार) प्राचीन काल में लोग पुत्री को मार दिया करते थे ताकि वे ख़र्च से बच सकें और किसी को अपना दामाद न बनाएं।

७. रहितनामा हजूरी भाई चउपा सिंघ छिब्बर, रहितनामे (संपा. प्यारा सिंघ पद्म), सिंघ ब्रादर्स श्री अमृतसर साहिब, २०००, पृष्ठ ८५

८. रहितनामा भाई प्रहिलाद सिंघ, रहितनामे, (सम्पा. प्यारा सिंघ पद्म), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २०००, पृष्ठ ६६; रहितनामा हजूरी भाई चउपा सिंघ छिब्बर, रहितनामे (सम्पा. प्यारा सिंघ पद्म), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २०००, पृष्ठ ७९; "कुड़ीमार मसंद जो, मीणे का प्रसादि लए, जो इनके हाथ का जनम गवावहि बाद।"; "जो गुरु का सिख होवै पंजां नाल नाता न करै। वरतण भी न करै— पहिले मीणै, दूजै रामराईए, तीजे कुड़ीमार, चउथे भद्दणी, पंजवें मसंद।"

९. रहितनामा हजूरी भाई चउपा सिंघ छिब्बर, उपरोक्त,पृष्ठ ९६; जो कंनिआ मारे सो ख़ूनी तनखाहीआ।

१०. प्रस्तावना, रहितनामे (संपा. प्यारा सिंघ पद्म), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २०००, पृष्ठ ३७; पराई स्त्री के लिए 'तुरकनी-संग' या 'मुसली-युद्ध' के संकेत समय की परिस्थितियों के अनुकूल इस्तेमाल किए गए हैं। एक तो यह कि जिस समय ख़ालसा पंथ की सृजना हुई उस समय वेश्या-प्रणाली आम प्रचलित थी और वेश्याएं अधिकतर मुसलिम महिलाएं ही हुआ करती थीं। योद्धा-सिपाही भोग-विलास का शिकार होकर गिर सकते थे, इसलिए इसकी विशेष रूप से मनाही थी। दूसरा यह था कि जिस समय सिक्खों का तुर्कों के साथ सामना हो रहा था तो आम ही मुसलमान पराई (हिंदू) स्त्रियों को उठा कर ले जाते और उन पर अपना योग्य अधिकार समझते थे। सिक्ख इसे लेकर आक्रोश में थे। उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से विनती की कि यदि हमें भी आज्ञा हो तो हम भी बदले में मुस्लिम महिलाओं को उठा लाएँ। गुरु साहिब ने सिक्खों को ऐसी अनुचित कार्यवाही करने से मना किया और कहा कि "हमने सिक्ख पंथ उच्च आदर्शों के लिए बनाया है। ऐसा नहीं करना।"

११. रहितनामा भाई देसा सिंघ, रहितनामे, उपरोक्त पृष्ठ १२९

१२. रहितनामा भाई दया सिंघ, देसा सिंघ, रहितनामे, उपरोक्त पृष्ठ ६९, ७४-७५, १३०

पाँच कर्म न करे— परधन, परस्त्री, परनिंदा, जूआ, मदिरा ;
सुरमादिक शिंगार नहिं नहिं पर तरुनी संगि।
यथार्थ स्त्री त्याग नहिं, गुर को ध्यान अभंग।;
परनारी जूआ अस्त चोरी मदरा जान।
पाँच ऐब ये जगत मो तजै सु सिंघ सुजान।

१३. तनखाहनामा भाई नंद लाल जी, भाई नंद लाल ग्रंथावली (सम्पा. डॉ. गंडा सिंघ), पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, २००९, पृष्ठ १९०

१४. उपरोक्त, भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरमति सुधाकर, भाषा विभाग, पंजाब, १९८८, पृष्ठ २५६

१५. रहितनामा हजूरी भाई चउपा सिंघ छिब्बर, रहितनामे, उपरोक्त, पृष्ठ ८०

१६. जगजीत सिंघ, सिक्ख इंकलाब, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २००२, पृष्ठ १५१-१५२; गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित मानव-समानता के सिद्धांत को जारी रखते गुरु-काल और सिक्ख इतिहास में स्त्री को धार्मिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में सम्मान मिलता रहा। स्त्री जाति के रुतबे को ऊँचा उठाने के कारण ही स्त्रियों ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर इंकलाबी संघर्ष में भाग लिया।

१७. रहितनामा हजूरी भाई चउपा सिंघ छिब्बर, रहितनामे, उपरोक्त, पृष्ठ १०५

१८. रहितनामा हजूरी भाई चउपा सिंघ छिब्बर, रहितनामे, उपरोक्त, पृष्ठ १०७

१९. http://en.wikipedia.org/wiki/Feminism; यह नारी (महिला) के लिए समान राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों को परिभाषित करने, उनकी स्थापना करने और उनकी रक्षा करने के उद्देश्य से अस्तित्व में आया, आंदोलनों और विचारधाराओं का संग्रह है। इसके विरोध में Anti-Feminism विचारधारा का पैदा होना, इस विचारधारा की सीमाओं और स्थिरता का सूचक है।

कैसा हो सलीका-ए-गुफ़्तगू?

–प्रिं. जोगिंदर सिंघ*

मनुष्य है धरती का बादशाह। बोलने की शक्ति एवं शब्दावली व गुफ्तगू के कारण समूची कायनात पर है इसकी बादशाहत।

अगर ध्यानपूर्वक विचार करें तो पता चलता है कि मानव जीवन एक चुनौती भरी ललकार है, एक अथक संघर्ष है, सिरतोड़ मेहनत है और या फिर एक नियमबद्ध कशमकश है। अपनी मंजिल की तरफ चले राही की एक राह है यह मानव जीवन।

यह भी स्पष्ट हकीकत है कि मानव जीवन अनमोल है, जानने योग्य है पहचानने योग्य है, लाभ लेने योग्य है, अकाल पुरख के लेखे लगाने योग्य है और कीर्ति कमाने योग्य है। अगर गिने चुने श्वासों की पूँजी लेखे लग जाए, तो समझो, मनुष्य-जन्म सफल हुआ।

देखने, जाचने, पढ़ने और परखने वाली बात यह है कि कोई मानव बोलचाल के पक्ष से, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और शिष्टाचारक जीवन-मूल्यों के पक्ष से कहाँ खड़ा है! समाज में कैसी नज़र आती है किसी व्यक्ति के सलीका-ए-गुफ़्तगू की झलक! बोलचाल के महत्व के पक्ष से कहाँ खड़ा है कोई व्यक्ति!

'पहले तोलो, फिर बोलो', जीवन-जाच के सिद्धांत पर निर्मित बोलचाल की भाषा होती है श्रेष्ठ, भावपूर्वक और अनमोल। सचमुच मीठे, शीतल और नम्र बोल होते हैं अनमोल, जो दिलों में मिश्री देते हैं घोल। सहजता से ही उतर जाते हैं हृदय में। परन्तु कटु, कड़वे कटाक्षपूर्ण बोल निंदनीय व तिरस्कारयोग्य होते हैं। शांत दिलों में भी विष घोल देते हैं ऐसे बोल।

सलीका-ए-गुफ़्तगू (बोलचाल का ढंग) कराता है अच्छे-बुरे इंसान की पहचान।

भाषा के सम्बंध में एक भावपूर्ण कथन है शेख साअदी का :

ता मर्द सुखन न गुफ़ता बाशुद,
ऐब-ओ-हुनरश रहुफ़ता बाशुद।

(जब तक कोई व्यक्ति बातचीत नहीं करता, उसके गुण या अवगुण छिपे रहते हैं।)

हकीकत यह है कि नम्र, मधुर, अच्छी और साफ़-सुथरी बोल-वाणी, आकर्षक व प्रभावी होने के कारण स्वाभाविक ही, श्रोता के हृदय में उतर जाती है। समझाती है अपना आशय, उद्देश्य और सार। शीतलता प्रदान करती है दूसरों के हृदय को और कला भी दरसाती है सभ्य गुफ्तगू की। याद रहे! बेहूदा, अक्खड़ व कटु भाषा न केवल शूल की भाँति चुभती है और गहरे जख्म देती है, बल्कि आग की ज्वाला बन कर, ईर्ष्या-भरपूर धुआँ भी छोड़ती है। यह एक उजली हकीकत है कि बेतुके, असभ्यक, व्यर्थ और अश्लील भाषा, न केवल

*१५३, पार्ट-१, हुडा, शाहबाद मारकंडा, जिला कुरुक्षेत्र–१३६१३५, फोन : ९०५०६-८०३७०

विकार पैदा करती है, बल्कि कई पारिवारिक, भाईचारक और सामाजिक क्लेश का कारण भी बनती है। सही दिशा प्रदान कर रहे हैं भक्त कबीर जी :

बोलत बोलत बढहि बिकारा ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८७०)

सत्य जानो, बेतुकी, असभ्य और कटु भाषा बोलने वाला, अधिकांशत: यह भी नहीं समझता कि किसी व्यक्ति के अच्छे विचारों को ख़त्म करना, एक अच्छे मानव को ख़त्म करने के समान है।

बोल-वाणी के पक्ष से, मानव में मानवता की कमी, सबसे बड़ी कमी है। कथन विचार करने लायक बात है कि यदि हाथ-पांव की कमी वाला मानव अपाहिज होता है तो सभ्य बोल-वाणी की कमी वाला भी . . .।

गुफ्तगू का दुखदायक पक्ष यह है कि कोई व्यक्ति यह भी नहीं जानता कि क्या बोलना है, कब बोलना है, किसके लिए बोलना है और किस प्रकार बोलना है! बोलचाल में कई व्यक्ति बेलगाम, वाचाल और मुखर होते हैं। उनकी ज़बान निरंकुश चलती है। ऐसे मनुष्य बिना किसी ज़रूरत के, बिना सोचे-समझे बोलते रहते हैं। उनकी बातचीत का न कोई आशय, न कोई निशाना और न ही कोई संदेश होता है।

बेतुकी वार्तालाप का न कोई संदेश होता है, न कोई उपदेश और न ही कोई आदेश होता है, बस, अनमोल पलों को व्यर्थ में गंवाने वाली बात होती है। कई बार ऐसी वार्तालाप का अंजाम होता है— मतभेद पैदा करना या फिर किसी का सिर फोड़ना या अपना फड़वाना। कई लोग तो बोल-वाणी के पक्ष से बिल्कुल ही गए गुज़रे होते हैं, बेअक्ल, पागल। उनके ऊल-जलूल, भड़काऊ और बेलगाम बोल आग लगा देते हैं समाज के शांत सागरों में भी। ऐसी अवस्था में भाईचारा टूट जाता है, नैतिक जीवन-मूल्यों की कलियां मुरझा जाती हैं।

कहने को ऐसे लोग स्वभाव-पक्ष से तीक्ष्ण, तेज-तरार और चुस्त होते हैं। ऐसे लोगों को कोई लाज-हया नहीं होती, किसी यश-अपयश की चिंता नहीं होती और न ही मान-अपमान का भय।

प्राय: बोलचाल के पक्ष से बेलगाम मनुष्य की भाषा शांत और सुखदायक वातावरण में ज्वाला भड़का देते हैं, वैर-विरोध उत्पन्न कर देते हैं। इसके फलस्वरूप, मानव जीवन-मूल्यों का विघटन होता है। दानवता के तांडव-नृत्य जैसी स्थिति बन जाती है। ऐसी दशा में शांत श्रोता भी खो बैठता है अपना मानसिक संतुलन। आपे से बाहर होकर, कई बार वह भी अंगारे ही उगलता है और अमानवीय कृत्य कर बैठता है। श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं :

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ॥
फिको फिका सदीए फिके फिकी सोइ।।
फिका दरगह सीटीए मुहि थुका फिके पाइ।।
फिका मूरखु आखीए पाण लहै सजाइ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७३)

जिह्वा को कटार मत बनाओ! जलती आग पर तेल मत डालो! दूसरों के जख्म पर नमक मत छिड़को! व्यक्ति को भली-भांति यह समझ होनी चाहिए कि— "तीर कमान से, बात ज़ुबान से, निकल जाए, तो वापस नहीं आते।"

अयोग्य व असभ्य वाणी के बारे में भक्त शेख फ़रीद जी फरमान करते हैं :

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८४)

अशुभ, अनावश्यक या फिर बेतुका बोलने की बजाय 'एक चुप, सौ सुख' का अनमोल सिद्धांत अपनाना श्री गुरु नानक देव जी की नज़र में कहीं अच्छा है :

जिथै बोलणि हारीऐ तिथै चंगी चुप ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४९)

बोल-वाणी का एक अन्य 'कुरूप चेहरा' किसी की निंदा-चुगली करना है :

मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७५५)

या फिर :

पारब्रहमु परमेसरु बिसरिआ अपणा कीता पावै निंदकु ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, ३७३)

समयानुसार चुप हो जाने का महत्व इस पक्ष से भी है कि जब एक मूर्ख चुप हो जाता है तो उसकी गणना सौ बुद्धिमानों में होती है।

बात अनूठी है, मगर है पते की। मनुष्य को बचपन में बोलना सीखते हुए दो-तीन वर्ष लगते हैं, जबकि संभल कर व सलीके से बोलने के लिए सारी उम्र भी थोड़ी है।

अति अनमोल विचार है लेखक मिस्टर थामसन का — "वाणी ख़ुद एक सभ्यता है।"

सलीका-ए-गुफ्तगू दरसाता है कि हमारा वास्तविक रूप कैसा है। याद रखें, "प्रेम की भाषा बोलने वाले लोग ही संसार के दुखों और कष्टों का निवारण किया करते हैं।"

श्री गुरु अरजन देव जी समझाते हैं कि सर्वशक्तिमान परमात्मा में न केवल सुजनता की गुणवत्ता है, बल्कि वह मिष्ठभाषा का भी प्रतीक है :

मिठ बोलड़ा जी हरि सजणु सुआमी मोरा ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७८४)

दो विश्व-प्रसिद्ध पुस्तकें (गुलसतां और बोसतां) का रचयिता शेख साअदी मीठे बोलों का सार इस प्रकार समझाता है :

ज़ुबान शीरीं मुलक गीरीं।

जीवन-जाच के साधक भली-भांति जानते हैं कि :

"कटु वचन बोलने वाले का तो कोई शहद भी नहीं ख़रीदता।"

सामाजिक व्यवहार और भाईचारा माँग करता है कि व्यक्ति को पता होना चाहिए कि उसने बोल-वाणी के पक्ष से समाज में कैसे विचरण करना है। सभ्य सलीका-ए-गुफ्तगू ही एक आदर्श समाज की कल्पना की जा सकती है।

'गालिब' अपने अनूठे सुख़ी होने का बयान इस प्रकार करता है :

हुए हैं और भी दुनिया में सुख़नवर अच्छे-अच्छे,
कहते हैं कि गालिब न है तर्ज़-ए-बयां और।

रब का वास्ता है, हमारी जीभ, जो तोला भर नरम मांस का टुकड़ा है, उसे कभी भी कटार मत बनाओ! सभ्य बोल ही, एक रोचक भाषा-शैली और प्रतिष्ठित शब्दावली का स्थान पाते हैं।

सुलझी हुई और स्वस्थ बोल-वाणी, जहाँ आदर्श जीवन का धुरा है, वहाँ यह मानव के लिए श्रृंगार का काम भी करती है।

क्या आरएसएस ने मुसलिम लीग के दंगाकारियों से श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की रक्षा की थी ?

*–स. जसकरन सिंघ **

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब ने ३० मार्च, २०२१ ई. को आयोजित बजट इजलास के दौरान सिक्ख सरोकारों से सम्बन्धित कई अहम प्रस्ताव पारित किये। इनमें से एक प्रस्ताव के माध्यम से भारत में सिक्खों सहित अल्पसंख्यकों को दबाने वाली साजिशों की सख़्त विरोधता की गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के इस प्रस्ताव में कहा गया कि "भारत एक बहुधर्मी, बहुभाषाई और बहुवर्गीय देश है। इसकी आज़ादी में प्रत्येक धर्म का बड़ा योगदान रहा है। इनमें से सिक्ख कौम ने ८० प्रतिशत से अधिक कुर्बानियां दीं। परंतु अफ़सोस की बात है कि पिछले लंबे समय से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) द्वारा देश को हिंदू राष्ट्र बनाने की साजिशों के मद्देनज़र दूसरे धर्मों की धार्मिक आज़ादी को खत्म किया जा रहा है, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप कर अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया जा रहा है।" इस प्रस्ताव के माध्यम से भारत सरकार को भी सचेत किया गया कि "वह आरएसएस द्वारा की जा रही साजिशों को लागू करने के लिए तत्पर होने की बजाय हर धर्म के अधिकारों और धार्मिक आज़ादी को सुरक्षित बनाने के लिए कार्य करे। जो भी तत्व अल्पसंख्यकों को दबाने का यत्न करते हैं, उन पर नकेल कसी जाये।"

समूचे भारत में पंजाब इसलिए प्रसिद्ध है कि कैसे यहाँ पर हर धर्म के लोग सुखी माहौल में अपना जीवन बसर करते हैं। समय-समय पर पंजाबी लोग सांप्रदायिक सद्भावना की मिसाल भी कायम करते रहते हैं। सन् १९४७ ई. की घटनाएँ बहुत दर्दनाक थीं। उस समय देश में शरारती तत्वों द्वारा पैदा किए गए सांप्रदायिक माहौल के कारण मुसलिम, हिंदू और सिक्ख भाईचारे के मध्य तलखी भरपूर माहौल बन गया था। पंजाब में वर्तमान समय में ये तीनों भाईचारे अमन-शान्ति के साथ रह रहे हैं और समय के साथ-साथ हालात में बहुत अंतर आया है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के उक्त प्रस्ताव के पारित होने के पश्चात् तथाकथित रूप से यह प्रचार आरंभ किया गया कि मार्च १९४७ ई. में आरएसएस ने सिक्खों के केंद्रीय धर्म-स्थान श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब को

**लेखक, सूचना एवं तकनीकी विभाग, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब–१४३००१, फोन : ९८७६६-८९९३०*

मुसलिंग लीग के दंगाकारियों से दो बार बचाते हुए हिंदू-सिक्ख एकता को बरकरार रखने के लिए श्री दरबार साहिब में ७५ स्वयं सेवकों की नियुक्ति की थी। इस बात का वर्णन मूलभूत रूप से विभाजन से पूर्व संयुक्त पंजाब में हिंदू भाईचारे से सम्बन्धित मंत्री रहे डॉ. गोकुल चंद नारंग द्वारा अपनी पुस्तक 'ट्रांसफॉरमेशन ऑफ सिक्खिज़म' में किया गया। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण सन् १९१२ में प्रकाशित हुआ। दूसरा १९४५ ई. में, तीसरा १९४६ में, चौथा १९५६ में और पाँचवाँ १९६० ई. में प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् भी यह पुस्तक कई बार दोबारा प्रकाशित होती रही। सन् १९५६ वाले संस्करण में डॉ. गोकुल चंद नारंग ने 'द स्ट्रगल फॉर खालिस्तान' नामक एक नया अध्याय इस पुस्तक में शामिल किया, जिसमें बिना किसी हवाले के यह बात दर्ज कर दी गई कि '२ मार्च, १९४७ ई. को मास्टर तारा सिंघ एक जत्थे के साथ (लाहौर) असेंबली हाल पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपनी कृपाण निकाल कर यह एलान किया कि वे मुसलिम लीग को काम नहीं करने देंगे। मास्टर तारा सिंघ द्वारा किये गए इस एलान ने बारूद में चिंगारी फेंकने का काम किया। मुसलिम लीग के विरोध में नारेबाज़ी कर रहे हिंदू व सिक्ख विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर पुलिस द्वारा गोली चलाई गई। इसके पश्चात् पंजाब में हिंसा भड़क उठी। हिंदुओं और सिक्खों का कत्ल करना और उनके घर जलाना आम बात हो गई। श्री अमृतसर साहिब के सभी बाज़ार भी जला दिए गए और यहाँ तक कि जब बहुत-से सिक्ख शहर से बाहर गए हुए थे तो गोल्डन टैंपल (श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब) पर भी एक कोशिश की गई, परन्तु आरएसएस के नौजवानों द्वारा खुशकिस्मती से इस कोशिश को नाकाम कर दिया गया। इस प्रकार टैंपल (श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब) को बेअदबी और संभव तबाही से बचाया गया था।"

डॉ. गोकुल चंद नारंग की पुस्तक के अलावा इस बात का ज़िक्र एक अन्य आरएसएस पक्षीय पुस्तक "Partition Days : The Fiery Saga Of RSS" में किया गया है जो कि मानिक चन्द्रा बाजपेयी और श्रीधर पारडकर द्वारा लिखी गई है, जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद सुधाकर राजे ने किया और इस पुस्तक का अंग्रेज़ी में पहला संस्करण अगस्त, २००२ ई. में नयी दिल्ली से प्रकाशित हुआ और प्रकाशक सुरुचि प्रकाशन था।

इस खोज के दौरान अभी तक उक्त दो पुस्तकों के अलावा किन्हीं अन्य ऐतिहासिक और भरोसेयोग्य दस्तावेज़ों, विषय से सम्बन्धित पुस्तकों, उस समय की मुख्य अखबारों, पत्रिकाओं आदि में यह जानकारी नहीं मिलती

कि आरएसएस ने अपने स्वयं सेवकों को श्री दरबार साहिब की सुरक्षा में लगा कर मुसलिम लीग के कार्यकर्ताओं से दो बार बचाया हो और सिक्ख अपने केंद्रीय धर्म-स्थान की सुरक्षा के प्रति इतने बेसुध हों कि उन्हें ऐसा समय देखना पड़े। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी देश-विभाजन से पूर्व १९२० ई. से निरंतर कार्यशील संस्था है और १९४७ ई. में श्री दरबार साहिब इसके प्रबंधाधीन था, जिससे तात्पर्य है कि संस्था का अपना सुरक्षा दस्ता, कर्मचारी वर्ग आदि भी यहाँ तैनात रहा होगा। आओ, इस विषय के सम्बंध में और गहराई के साथ जानने के लिए तथ्यों की पड़ताल करते हैं

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से आरएसएस की हिंदू राष्ट्र बनाने की विचारधारा के विरुद्ध पारित किये गए प्रस्ताव के बाद सिक्खों के विरुद्ध ऐसे तथाकथित प्रचार की शुरूआत करते हुए, इसे बल प्रदान करने के लिए 'द प्रिंट' नामक ऑनलाइन पोर्टल पर २००२ की सुरुचि प्रकाशन वाली पुस्तक को आधार बना कर दिल्ली स्थित संघ के साथ जुड़े थिंक टैंक 'विचार-विनिमय केंद्र' के रिसर्च डायरेक्टर अरुण आनंद द्वारा लिखा एक लेखन 'How RSS helped save Darbar Sahib twice and upheld Hindu-Sikh unity'& अप्रैल, २०२१ ई. को प्रकाशित किया गया। इसका उद्देश्य यह प्रतीत होता है कि जिस प्रकार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा पारित प्रस्ताव के बाद सिक्खों को चिढ़ाया जाना या नीचा दिखाया जाना हो कि आपने संघ की हिंदू राष्ट्र बनाने वाली विचारधारा का विरोध किया है परन्तु संघ तो वह संस्था है जिसने आपके केंद्रीय धर्म-स्थान को बचाया है। 'द प्रिंट' ऑनलाइन पोर्टल के संस्थापक शेखर गुप्ता हैं, जो कि ८ जून, २०१८ ई. को प्रकाशित किये अपने लेख में ख़ुद लिखते हैं कि वे अपने स्कूली दौर में आरएसएस के साथ जुड़े रहे हैं, जिससे इनकी भी संघ के साथ गहरी पृष्ठभूमि सिद्ध होती है।

अरुण आनंद की तरफ से दावा : अरुण आनंद द्वारा लेख में यह दावा किया गया कि ६ मार्च, १९४७ ई. की रात को जब मुसलिम लीगियों ने श्री अमृतसर साहिब पर हमले किये और उन्होंने कृष्णा कपड़ा मार्केट तथा श्री दरबार साहिब पर हमला करने की साजिश बनाई हुई थी, तभी श्री दरबार साहिब की सुरक्षा में आरएसएस ने ७५ स्वयंसेवकों को नियुक्त किया हुआ था। उपरांत ९ मार्च, १९४७ ई. को जब मुसलिम लीगियों के समूह श्री दरबार साहिब पर हमला करने के लिए तीन दिशाओं (कटरा करम सिंघ, नमक मंडी और शेरांवाला दरवाज़ा) से आ रहे थे तब भी उन्हें रोकने के लिए आरएसएस के स्वयं सेवकों द्वारा अहम

भूमिका अदा की गई। यह भी दावा किया गया है कि श्री दरबार साहिब में बहुत कम सेवादार थे। वे भी डरे हुए थे और साथ ही लगभग १०० निहत्थे श्रद्धालु अंदर फंसे हु थे I

संघ-समर्थन वाली पुस्तकें और इसकी विचारधारा वाले व्यक्ति द्वारा लिखे एवं प्रकाशित किये लेख के माध्यम से श्री दरबार साहिब की सुरक्षा में सिक्खों की ढीली कारगुज़ारी, पतनोन्मुख कला और आवश्यक प्रबंध की अनुपस्थिति दरसाने वाली बात हजम नहीं होती, इसलिए ६ से १० मार्च, १९४७ ई. के दरमियान श्री दरबार साहिब से सम्बन्धित इन दावों की खोज की गई, जिससे बहुत कुछ स्पष्ट हुआ है। खोज किये तथ्यों द्वारा उक्त दावों के विपरीत यह बात सामने आई है कि ६ मार्च की शाम तक कई सिक्ख नेता और बड़ी संख्या में सिक्ख संगत श्री दरबार साहिब में मौजूद थी तथा ९ मार्च को जो मुसलिम लीगियों के द्वारा हमला श्री दरबार साहिब पर किया जाना बताया गया है, ऐसी कोई घटना उस समय के दस्तावेज़ों में नहीं मिलती।

इतिहास गवाह है कि सिक्ख कौम सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की गरिमा और सुरक्षा को लेकर हमेशा ही संवेदनशील और तैयार-बर- तैयार रही है। समूचे विश्व को सर्व-साझीवालता का संदेश देने वाले इस महान और पवित्र स्थान पर हमला करने वाले हमलावरों को सिक्खों ने हमेशा ही अपने सामर्थ्य के अनुसार मुँहतोड़ जवाब दिया है। फिर यह कैसे हो सकता है कि सन् १९४७ ई. में देश-विभाजन से पूर्व भड़के दंगों के दौरान सिक्ख श्री दरबार साहिब की सुरक्षा में लापरवाही करते संघ-समर्थक दावे की अलग-अलग स्रोतों से गहरी जाँच-पड़ताल करने के पश्चात् उपरांत सामने आया है कि यह सरासर गलत प्रचार है।

उस समय के प्रसिद्ध अकाली अगुआ मास्टर तारा सिंघ की निजी डायरी में से उनकी हस्तलिखित गवाही, सन् १९४७ में बँटवारे से सम्बन्धित विषयों पर लिखी ज़रूरी पुस्तकों (पंजाब दा उजाड़ा-ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल मुसलिम लीगियों दे हमले दी विथिया : १९४७ – स. गुरबचन सिंघ तालिब; लहू-लुहाण, वंडिआ, वड्ढिआ-टुक्किआ पंजाब – इश्तियाक अहमद, पाकिस्तानी घल्लूघारा-ज्ञानी प्रताप सिंघ, रिपोर्टिंग पार्टीशन ऑफ पंजाब : १९४७ – प्रो. रघुवेंद्र तंवर), अखबारों तथा अन्य दस्तावेज़ों के आधार पर स्पष्ट होता है कि स्थानीय सिक्खों और हिंदुओं ने मिलकर सामूहिक रूप से मुसलिम लीग के दंगाकारियों का मुकाबला किया। सन् १९४७ ई. का संघर्ष हिंदू और सिक्खों का संघर्ष था, जिसमें दोनों ने मिलकर मुकाबला किया, मगर आरएसएस द्वारा श्री दरबार साहिब की

सुरक्षा के लिए अपने स्वयं सेवकों की नियुक्ति कर इस पवित्र सिक्ख स्थान की सुरक्षा से सम्बन्धित कोई निष्पक्ष और विश्वसनीय हवाला नहीं मिलता। सामने आता है कि यह मनघड़त प्रचार किया गया है और इसे तथ्य के रूप में पेश करने के लिए आरएसएस की विचारधारा वाले और इसका प्रचार करने वाले लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकों में यह बात बिना किसी ठोस हवालों के दर्ज कर दी गई है। सत्य यह सामने आया है कि मार्च, १९४७ ई. की गड़बड़ के अवसर पर श्री दरबार साहिब पर मुसलिम लीगियों द्वारा कोई हमला नहीं किया गया और ५ से १० मार्च के दरमियान यहाँ बड़ी संख्या में सिक्ख मौजूद थे। सिक्ख नेताओं ने एहतियात के तौर पर श्री दरबार साहिब में ऐसा प्रबंध अवश्य किया था कि यदि मुसलिम लीग वाले हमला करते तो उनका बुरा हाल होना था। इस बात की गवाही मास्टर तारा सिंघ ख़ुद भरते हैं।

इस मनघड़त कहानी से सम्बन्धित सत्य जानने के लिए सर्वप्रथम अकाली दल और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान रहे मास्टर तारा सिंघ द्वारा धर्मशाला में अपनी जेल-यात्रा के दौरान लिखी गई निजी डायरी में से गवाही के तौर पर अंश अति अहम हैं। डॉ. गोकुल चंद नारंग द्वारा लिखित पुस्तक "Transformation Of Sikhism" का नया संस्करण सन् १९६० में जेल के अंदर पढ़ने के बाद मास्टर तारा सिंघ अपनी डायरी में लिखते हैं— "इस संस्करण में डॉक्टर साहब (ने) मौजूदा सिक्ख पोजीशन और सिक्ख हिंदू तनाव व मोर्चों का वर्णन किया है। इस पुस्तक का एक-एक फ़िकरा कट्टर हिंदू तअस्सुब के जहर से भरा पड़ा है। विस्तार सहित खोज कर प्रत्येक मुद्दे का जवाब लिखने से तो यह पुस्तक बहुत बड़ी हो जाती है, इसलिए मैं केवल उन गलत बियानिया, झूठ, मनघड़त कहानियों का ही ज़िक्र करूँगा जो दर्ज किए गए हैं। मैं हैरान हूं कि डॉक्टर साहब जैसा बुद्धिमान आदमी कैसे तअस्सुब के प्रभावाधीन सच्चाई की तरफ से मुँह मोड़ लेता है। मुझे तो शक है कि इतने मनघड़त झूठ डॉक्टर साहब ने स्वयं नहीं पैदा किए, अन्य लोगों ने पैदा किए हैं। डॉक्टर साहब के तअस्सुब को पसंद आए हैं और उन्होंने पता करने की ज़रूरत ही नहीं समझी तथा लिख दिए हैं। सच पूछो तो कोई ज़िम्मेदार इतिहासकार इस प्रकार अपनी पूर्व लिखित पुस्तक का जानबूझ कर नाश नहीं करता। ये नये बढ़ाए हुए लेख मात्र कट्टर हिंदू फ़िरकाप्रस्ती प्रचार ही हैं। बेशक डॉक्टर साहब को हक है कि वे अपनी दलीलों के साथ अपने पक्ष को सिद्ध करने का यत्न करें, लेकिन उन्हें यह हक नहीं है कि हिंदुओं की तारीफ़ या पक्ष में और सिक्खों के विरुद्ध झूठी पैदा की गई

कहानियाँ लिखें। इस झूठ और तअस्सुब के पुलिंदे में से मैं कुछ एक पर उसी तरतीब में नोट लिखता हूं जैसे इस पुस्तक में लिखे गए हैं :-

१. इस लेख में लिखा है कि २ मार्च, १९४७ ई. को मास्टर तारा सिंघ अपने साथियों का जत्था लेकर असेंबली हाल गया और कृपाण निकाल कर कहने लगा कि वह मुस्लिम लीग का काम नहीं चलने देगा। यह बात सरासर गलत है। न मैं जत्था लेकर गया और न ही मैंने कृपाण नंगी की है। हां, असेंबली में अकाली सदस्यों का नेतृत्व कर मैंने, 'पाकिस्तान मुर्दाबाद' के नारे भीड़ के सामने अवश्य लगाए थे। डॉक्टर साहब की यह भूल कोई वजनदार नहीं है, क्योंकि मेरे द्वारा कृपाण निकाल कर मुसलिम लीग का झंडा फाड़ देने की गलत बात उस समय प्रेस में बहुत लिखी गई थी और अब तक लोग इस गलत बात को ठीक समझे बैठे हैं। मैं इसका विरोध (खंडन) तो केवल इसलिए कर रहा हूं कि यह मेरी जाति के साथ सम्बन्ध रखती है और डॉक्टर साहब की लापरवाही प्रकट करती है।

२. डॉक्टर साहब लिखते हैं कि श्री अमृतसर साहिब शहर के बहुत से सिक्ख विदेश गए हैं और मुसलमानों ने श्री दरबार साहिब पर हमला करने का यत्न किया। उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) सेवकों ने श्री दरबार साहिब को अपमानित होने और तबाही से बचाया। यह सरासर मनघड़त झूठ है। न श्री अमृतसर साहिब के बहुत-से सिक्ख कभी विदेश गए, न मुसलमानों ने श्री दरबार साहिब पर हमला किया और न संघ के सेवकों ने बचाया। यह मनघड़त झूठी कहानी केवल संघ के सेवकों की तारीफ़ में बनाई गई है। यह कहानी आज तक न मैंने कहीं पर पढ़ी और न ही सुनी है। यह सही है कि श्री अमृतसर साहिब शहर में मुसलिम पुलिस वालों की मदद के साथ मुसलमानों का काफ़ी दबाव बन गया था। इस दबाव की हवा उस समय निकली, जब अकालियों ने पुलिस का जगह-जगह पर मुकाबला कर उन्हें भगाया। जब ग्रामीण क्षेत्रों में सैकड़ों की संख्या में मारे गए मुसलमानों की लाशें शहर में आनी शुरू हो गईं तब इन लाशों को देखकर मुसलिम लोग घबरा गए थे। श्री दरबार साहिब को तो कभी ख़तरा हुआ ही नहीं था। हां, एहतियात के तौर पर श्री दरबार साहिब, में ऐसा प्रबंध अवश्य किया गया था कि अगर मुसलिम दंगाकारी आते तो उनका बहुत बुरा हाल होता।

उस समय हिंदू और सिक्ख एक जान होकर लड़ रहे थे, इसलिए मैं ऐसी रचना के बारे में ज्यादा कुछ नहीं लिखना चाहता। इतना ही कहना है कि उस समय हिंदुओं सहित संघियों ने 'सत श्री अकाल' के नारे को अपना लिया था।

क्रमश: . . .

ख़बरनामा

एडवोकेट धामी द्वारा बापू सूरत सिंघ के निधन पर शोक व्यक्त

श्री अमृतसर साहिब : १५ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बंदी सिंघों की रिहाई के लिए लम्बा समय संघर्ष करने वाले बापू सूरत सिंघ के निधन पर गहरे दुख का प्रकटीकरण किया है। एडवोकेट धामी ने कहा कि बापू सूरत सिंघ ने अपनी ज़िंदगी का लम्बा हिस्सा बंदी सिंघों की रिहाई हेतु लगाया। उन्होंने अपना संघर्ष पूरी दृढ़ता के साथ लड़ा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि बापू सूरत सिंघ के निधन से सिक्ख कौम ने एक दृढ़ संकल्पी नेता खो दिया है, जिससे पंथ को बड़ा घाटा हुआ है। एडवोकेट धामी ने परमात्मा के समक्ष अरदास की कि बापू सूरत सिंघ को अपने चरणों में निवास प्रदान करें और परिवार को ईश्वरीय आदेश मानने का बल प्रदान करें।

इसी दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण ने भी बापू सूरत सिंघ के निधन पर गहरी संवेदना प्रकट करते हुए परिवार के साथ हमदर्दी ज़ाहिर की।

गुरमीत राम रहीम को फिर से पैरोल दिए जाने पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सख़्त एतराज़ प्रकट

श्री अमृतसर साहिब : २८ जनवरी : कत्ल और जब्र-जनाह के संगीन दोषों के अंतर्गत जेल में सज़ा काट रहे डेरा सिरसा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को सरकार द्वारा फिर से पैरोल दिए जाने पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सख़्त एतराज़ प्रकट किया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि यह फ़ैसला सरकार की दोहरी नीति को दरसाता है। उन्होंने कहा कि सरकार राजनैतिक लाभ के लिए राम रहीम को बार-बार पैरोल प्रदान कर रही है, जबकि तीन-तीन दशक से देश की विभिन्न जेलों में नज़रबंद बंदी सिंघों को अपनी सज़ा पूरी करने के बावजूद भी रिहा नहीं किया जा रहा और सुप्रीम कोर्ट द्वारा भाई बलवंत सिंघ राजोआण की सज़ा माफी पर सरकार को फ़ैसला करने की हिदायत करने के बावजूद भी पक्षपाती रवैया अपनाया जा रहा है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि भाजपा सरकार राजनैतिक लाभ के लिए राम रहीम के घिनौने अपराधों को आँखों से ओझल कर उसे पहले भी चुनाव के दौरान पैरोल दे चुकी है और अब पुन: दिल्ली की विधान सभा और हरियाणा

में निगम चुनाव में राजनैतिक लाभ लेने के लिए उसे जेल से बाहर लाया गया है, जो कि सरासर गलत है। उन्होंने कहा कि सरकारों की ऐसी नीति सिक्खों को बेगानेपन का एहसास करवाने वाली है। एडवोकेट धामी ने राम रहीम की पैरोल को तुरंत रद्द कर उसे फिर से जेल भेजने की माँग की है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा दोआबा क्षेत्र में धर्म-प्रचार के लिए प्रचारक जत्थे किये गए रवाना

श्री अमृतसर साहिब : ८ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की ३५०वर्षीय शहीदी शताब्दी को समर्पित धर्म प्रचार लहर के अंतर्गत आज गुरुद्वारा श्री गरना साहिब, बोदल, जिला होशियारपुर से १०० वालंटियर प्रचारक सिंघों को जत्थों के रूप में ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार के लिए रवाना किया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के निर्देशानुसार जत्थे को रवाना करते समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कल्याण, मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण तथा ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी) सहित प्रमुख शख्सियतें उपस्थित थीं।

कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कल्याण तथा मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण ने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी के प्रबंधाधीन सिक्ख मिशनरी कॉलेजों एवं गुरमति विद्यालयों से शिक्षित विद्यार्थियों का वालंटियर के रूप में चयन किया गया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के निर्देशानुसार इन्हें चार-चार सिंघों के जत्थे के रूप में ग्रामीण क्षेत्रों में भेजा जा रहा है, जो एक गाँव में लगभग दस दिन के करीब रह कर संगत को गुरमति सिद्धांतों व सिक्ख इतिहास की जानकारी प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि खालसा पंथ द्वारा नवम पातशाह श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की ३५० वर्षीय शहीदी शताब्दी नवंबर २०२५ में श्री अनंदपुर साहिब में मनाई जा रही है, जिसे समर्पित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गुरमति समारोह की श्रृंखला आरम्भ की जायेगी। इसी के अंतर्गत तख़्त श्री केसगढ़ साहिब श्री अनंदपुर साहिब में खालसा साजना दिवस बैसाखी के अवसर पर विशेष तौर पर अमृत संचार करवाया जा रहा है, जिसमें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा खालसा सजाते समय अमृत संचार के लिए इस्तेमाल किए गए खंडे द्वारा सिंघ साहिबान अमृत का बाटा तैयार करेंगे। उन्होंने कहा कि ये जत्थे अमृत संचार के लिए भी संगत को प्रेरणा प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि बैसाखी तक ये जत्थे दोआबा क्षेत्र के गाँवों में धर्म प्रचार लहर जारी रखेंगे, तत्पश्चात् इन्हें अन्य क्षेत्रों में भेजा जायेगा।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कल्याण तथा मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण के अलावा ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), अतिरिक्त सचिव स. बिजै सिंघ, स. संदीप सिंघ सीकरी क्षेत्र प्रभारी शामचुरासी, प्रिंसिपल बीबी मनजीत कौर, स. महिंदरपाल सिंघ गुम्बर, इंचार्ज स. करतार सिंघ, स. बहाल सिंघ, स. गुरभाग सिंघ, मैनेजर स. अवतार सिंघ, गुरुद्वारा श्री गरना साहिब के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी सरताज सिंघ, प्रचारक भाई कल्याण सिंघ, भाई अमरजीत सिंघ जंडी, भाई गुरजंट सिंघ तिब्बड़, उप प्रबंधक स. गुरप्रीत सिंघ आदि उपस्थित थे।

सिक्ख कत्लेआम के मामले में सज्जन कुमार को मिले मिसाली सज़ा : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : १२ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने दिल्ली सिक्ख कत्लेआम के दोषी सज्जन कुमार को सरस्वती विहार में दो सिक्खों के कत्ल के मामले में दिल्ली की राऊज़ एवेन्यू अदालत द्वारा दोषी करार दिए जाने का स्वागत करते हुए दोषी को सख़्त से सख़्त सज़ा दिए जाने की आशा की है। एडवोकेट धामी ने कहा कि सन् १९८४ का सिक्ख कत्लेआम मानव इतिहास में मानव विरोधी क्रूर कृत्य के रूप में अंकित है, जिसके पीड़ित परिवार लगभग चार दशक से इंसाफ़ के लिए आज भी संघर्ष कर रहे हैं, जो कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के लिए शर्मनाक बात है। आज जब सिक्ख कत्लेआम के एक मामले में कांग्रेसी नेता सज्जन कुमार दोषी पाए गए हैं तो उसे मिसाली सज़ा दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि सज्जन कुमार के अलावा कांग्रेसी नेता जगदीश टाइटलर सहित अन्य कई नेता सिक्ख कत्लेआम में शामिल थे और प्रत्येक दोषी को सख़्त सज़ा मिलनी चाहिए।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि सिक्खों की दुश्मन जमात कांग्रेस ने सिक्खों के ज़ख़्म भरने की जगह सिक्ख कत्लेआम के दोषियों को हमेशा उच्च पद देकर नवाजा है। उन्होंने कहा कि अदालत के इस फ़ैसले द्वारा सिक्खों की भावनाओं को कुछ हद तक आश्वासन मिलेगा। उन्होंने भारत सरकार से माँग की कि सन् १९८४ सिक्ख कत्लेआम से सम्बन्धित देश के विभिन्न स्थानों पर चल रहे मामलों को फास्ट ट्रैक अदालतों के माध्यम से आगे बढ़ाया जाये, ताकि इंसाफ़ मिलने में और देरी न हो। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने यह भी माँग की कि देश की संसद में सिक्ख कत्लेआम के प्रति संवेदना और क्षमा का एक प्रस्ताव भी पारित किया जाये। यह अपने देश में सन् १९८४ में कत्ल किए गए निर्दोष सिक्ख नागरिकों को प्रति एक श्रद्धाँजलि होगी।

भाई मरदाना जी

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN March 2025

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

अकाली फूला सिंघ जी

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-3-2025